पुश

P. U. S. H.

मध्यस्थता की प्रार्थना में आरंभकों के लिए निर्देश पुस्तिका

फादर धीरज साबू आई.एम.एस.

P U S H: A Handbook For The Beginners In Prayer Of Intercession

Author	Fr. Dheeraj Sabu IMS
Published by	Santvana Community of Disciples A – 9, Hans Apartments, West Sant Nagar Burari – Post, Delhi 110084, India
Translated by	Mrs. Bridgit Cyril
Edited by	F. Anand IMS
Published on	27th August 2008 (Feast of St. Monica, the model of intercessors)
Cover Design	John Paul
Printed at	New Life Printers (P) Ltd. B – 3, 4/B-4 Ansal Building Commercial Complex, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi Ph: 09312639883, 9213996999, 47053088 E-mail: rajuvettikal@gmail.com, rajuvettikkal@yahoo.com
For copies	Santvana Community A – 9, Hans Apartments, West Sant Nagar Burari – Post, Delhi 110084, India Info@santvana.org santvanadelhi@gmail.com
Imprimatur	Archbishop Vincent Concessao

विषय सूची

संदेश : महाधर्माध्यक्ष विन्सेन्ट एम. कोन्सेसाऊ

प्राक्कथन : सीरिल जॉन

प्रस्तावना

अध्याय एक 13
प्रार्थना का सामर्थ्य

अध्याय दो 20
मध्यस्थता की प्रार्थना

अध्याय तीन 26
मध्यस्थता का सेवा कार्य अनन्त है

अध्याय चार 29
मध्यस्थता बुराई के विरुद्ध आत्मिक संघर्ष है

अध्याय पाँच 30
मध्यस्थता कैसे करें?

अध्याय छः 36
हमारे मध्यस्थ और स्वर्गिक सहायक

अध्याय सात 40
मसीह में हमारा मिशन एवं सौभाग्य

अध्याय आठ 45
पवित्र परम प्रसाद में येशु हमारा दिलासा

अध्याय नौ 51
कलीसिया के खज़ाने से कुछ प्रार्थनाएँ

उपसंहार 59

परिशिष्ट 61

संदेश

कलीसिया ख्रीस्तीय मिशन की मध्यस्थता में भाग लेती है। कलीसिया के हर जिम्मेदार सदस्य को, व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से इस मिशन में भाग लेना चाहिए।

सान्त्वना समुदाय के शिष्य, 'प्रार्थना एवं वचन घोषणा' के कृपादान द्वारा लोगों को प्रार्थना के लिए प्रेरित एवं सम्मिलित करते हैं। बहुत सारे उत्साही लोकधर्मियों को यूखरिस्तीय आराधना और दूसरों के लिए प्रार्थना हेतु आगे आते देखकर मुझे काफी हर्ष होता है। मध्यस्थ प्रार्थना में आरंभकों के लिए यह हस्त पुस्तिका 'पुश' बहुतों को मध्यस्थता के प्रेरिताई कार्य में प्रवेश करने के लिए प्रेरित करे और मार्गदर्शन दे।

नई दिल्ली	विन्सेन्ट एम. कोन्सेसाऊ
21.08.2008	दिल्ली के महाधर्माध्यक्ष

प्राक्कथन

इन 2000 सालों के कलीसिया का इतिहास, बहुत से लगनशील मानव, धन्य सन्तों और अन्य लोगों के उदाहरणों से भरापूरा है, जिन्होंने अपने लोगों के लिए मध्यस्थता की और पूरे विश्व पर बहुतायत से आशीष लाई। रिडम्प्तोरिस मिसियो नामक पुस्तक में सन्त पापा जॉन पौल द्वितीय, प्रभावशाली सुसमाचार प्रचार में मध्यस्थता की भूमिका पर जोर देते हैं। 'मिशनरियों के सफर में प्रार्थना साथ होना चाहिए जिससे ईश्वर की कृपा द्वारा वचन घोषणा प्रभावशाली हो।' (अनुच्छेद 78)। प्रार्थना में जन्म लेकर विकसित होनेवाले सभी सत्कार्यों की पहल फल-फूल गए और उससे अधिक फल उत्पन्न हुए।

यह बड़े खेद की बात है कि कलीसिया में अब यह प्रवृत्ति आई है कि हम प्रभु से अधिक अपने निजी बल और साधन पर भरोसा रखते हैं। किसी भी परियोजना में हम अपनी कुशल योजना, अवधारणा शिविर, कोष का संचारन, प्रबंध और नेतृत्व की निपुणता, व्यावसायिक समर्थन इत्यादि पर महत्व देते हैं। बहुत कम ही परियोजनायें प्रार्थना और मध्यस्थता की कृपा पर आधारित हैं। अगर हम में अपेक्षित साधन और निपुणता है तो परियोजनाएँ शानदार हो सकती हैं। पर यह प्रभु के मिशन को पूरा नहीं कर सकती है। कई बार जब प्रभु का कार्य सम्पन्न होता है, तब कार्य का प्रभु वहाँ नहीं होता है।

प्रश्न यह है कि क्या हम, ईश्वर की प्रतिज्ञाओं से सहमत हैं जो, उन्होंने मध्यस्थता की क्षमता के लिए बनाई हैं? "यदि तुम मुझे पुकारोगे, तो मैं तुम्हें उत्तर दूँगा और तुम्हें वैसी महान् तथा रहस्यमय बातें बताऊँगा, जिन्हें तुम नहीं जानते।'' *(यिरमियाह 33,3)* ''वे सब कार्य सम्पन्न कर सकता है, जो हमारी प्रार्थना और कल्पना से अत्यधिक परे है।'' *(एफीसी 3,20)* ''मैं तुम से कहता हूँ, वह शीघ्र ही उनके लिए न्याय करेगा।''

(लूकस 18,8)। 1933 में जर्मनी के तानाशाह शासक अडॉल्फ हिटलर ने अपनी शक्ति द्वारा पूरे संसार को अपने अधीन कर लिया। डुनकिर्क युद्ध एक साफ उदाहरण है जहाँ मध्यस्थ प्रार्थना ने हिटलर को हारया। जब हिटलर ने अपनी सेना को फ्रांस, ब्रिटेन और बेल्जियम भेजा तो इन देशों की सेनाएँ नाज़ियों से हार कर इंग्लिश चैनल की तरफ भाग गईं। वहाँ वे फँस गये। अगर वे जहाज़ द्वारा नहर के उस पार बचने की कोशिश करते तो हिटलर की पनडुब्बियाँ उन्हें सागर में डुबो देती।

सभी मित्र राष्ट्र सेनाओं ने सभी तरीके अपनाये और सब नाकामयाब साबित हुए। पर एक तरीका रह गया। राजा जॉर्ज तृतीय ने पूरे देश में एक दिन की मध्यस्थ प्रार्थना करने का निर्णय लिया। ब्रिटिश सेना की ओर से प्रार्थना करने के लिए लाखों ईसाई जुट गये। ईश्वर ने तुरन्त उनकी प्रार्थना सुन ली। ब्रिटिश की तरफ का सागर बिल्कुल शान्त था। यह समझते हुए कि इस कार्य में ईश्वर का हाथ है, अंग्रेजों ने हज़ारों छोटे नाव भेजने शुरू किये। उनको बचाने के लिए घने कोहरे ने भी उनका साथ दिया। एक घंटे में करीब 3,30,000 मित्र राष्ट्र सेना हिटलर के हाथ से बच गये। शत्रु के चंगुल से बचाने के लिए, सभी सेना, इंगलैण्ड के समुद्रतट पर एक घेरा बनाकर प्रभु को धन्यवाद देते हुए प्रार्थना करने लगे।

मध्यस्थता हमारी सभी पहलों का प्रस्फोटक और मुख्य प्रवर्तक होना चाहिये। घोड़े को रथ के आगे ही होना चाहिये। अर्थात् प्रार्थना हमारी अगुवाई करे। मध्यस्थता को शक्तिशाली बनाने के लिए हमें असामान्य होने की आवश्यकता नहीं है। एक सामान्य ईसाई का साधारण विश्वास राष्ट्र के इतिहास को बदल सकता है। ''एलियस हमारी ही तरह निरे मनुष्य थे। उन्होंने आग्रह के साथ इसलिए प्रार्थना की कि पानी न बरसे और साढ़े तीन वर्ष तक पृथ्वी पर पानी नहीं बरसा। उन्होंने दुबारा प्रार्थना की। स्वर्ग से पानी बरसा और पृथ्वी पर फसल उगने लगी।'' *(याकूब 5:17-18)* एक मध्यस्थ अपने घुटनों पर रहकर असम्भव को भी सम्भव करा सकता है। मेडजुगोर्जे शहर में माँ मरियम ने 21 जुलाई, 1982 में दर्शन देकर प्रकट किया कि ''उपवास तथा प्रार्थना द्वारा युद्ध को रोका जा सकता है और प्रकृति के नियम को निलंबित किया जा सकता है। किसी भी परिस्थिति,

व्यक्ति या समुद्र का रिमोट कंट्रोल, एक मध्यस्थ के हाथ में होता है, जिसके लिए वह प्रार्थना करने का निश्चय कर लेता है।''

'पुश' एक बहुत ही श्रेष्ठ पुस्तक है जिसमें फादर धीरज साबु ने अपनी गहरी अन्तर्दृष्टि और मध्यस्थ प्रार्थना के बारे में अपनी दृढ़ धारणाओं को हमारे साथ बाँटा है। फादर धीरज, सान्त्वना समुदाय के निदेशक, ईश वचन के प्रचारक तथा राष्ट्रीय सेवा दल के सदस्य होते हुए मध्यस्थता के सेवा कार्य में लगे हुए हैं। उन्हें मध्यस्थ प्रार्थना की शक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव है। जहाँ भी सान्त्वना समुदाय अपनी शाखा स्थापित करता है, यह ध्यान में रखता है कि वहाँ अविरत आराधना और मध्यस्थ प्रार्थना की शुरुआत हो। इसलिए लेखक पूर्ण रूपेण सक्षम है कि वे हमें मध्यस्थ प्रार्थना पर प्रामाणिक चिन्तन दें।

मैं देखता हूँ कि हमारे कैथलिकों के बीच मध्यस्थता पर शायद ही कोई अच्छी पुस्तक है। यहाँ प्रत्यक्ष संश्लेषण है जो पाठक को इस प्रकार की प्रार्थना और मध्यस्थता में बढ़ने में अत्यधिक मदद करेगी। मध्यस्थता पर कैथलिक शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए, यह पुस्तक एक आवश्यक और लाभदायक साधन है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक में प्रस्तुत जानकारी, निर्देशन और प्रोत्साहन द्वारा, न सिर्फ मध्यस्थता के कार्य में लगे लोगों और कैथलिक करिशमाई नवीकरण के सदस्यों के लिए परन्तु सभी ईसाइयों के लिए यह बहुत ही लाभदायक मार्गदर्शक होगा। मेरी यह प्रार्थना और इच्छा है कि यह पुस्तक पूरे विश्व में मध्यस्थताओं को बढ़ाने में मदद करे।

सिरिल जॉन
अध्यक्ष, राष्ट्रीय सेवा दल
(भारत की कैथलिक करिशमाई नवीकरण सेवा)

प्रस्तावना

'P.U.S.H.' जिसका अर्थ है 'Pray Until Something Happens' (जब तक कुछ परिणाम न निकले प्रार्थना करते रहो) यह एक प्रथमाक्षर शब्द है जो, कुछ युवाओं की कलाइयों पर पाया जाता है। यह पुस्तक प्रार्थना करने में हिचकिचाने वालों के लिए (जैसे मैं था) एक हल्का-सा 'पुश' या प्रोत्साहन है। मैं प्रार्थना तो करता था पर सोचता था कि क्यों किसी को प्रार्थना करनी चाहिए। चूँकि मैं मध्यस्थ प्रार्थना पर लिख रहा हूँ, कृपया मुझे कोई बहुत बड़ा मध्यस्थ न समझें। मैं तो मध्यस्थता की परिचर्या में प्रवेश करने के लिए महत्वांकाक्षी हूँ। दिनांक 28 दिसम्बर 2008 को मैं अपनी पुरोहिताई अभिषेक की रजत जयन्ती मनाने जा रहा हूँ। यहाँ से मैं एक मिशनरी पुरोहित के रूप में अपने जीवन को एक नयी दिशा देने जा रहा हूँ। मेरे पिछले अनुभवों द्वारा मैं समझ गया हूँ कि मध्यस्थता एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और अति आवश्यक सेवा कार्य है, जो संसार में एक सकारात्मक प्रभाव बनाता है। यहाँ मैं अपने कुछ विचारों को और धर्मग्रन्थ के कुछ अवतरणों को प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो मध्यस्थता करने के लिए हमारा आह्वान करते हैं और हमें सिखाते भी हैं। कलीसिया के प्रलेखनों को तथा कुछ धर्मी लेखकों के विचारों को भी प्रस्तुत कर रहा हूँ जो मुझे लाभदायक और प्रेरणादायक लगे। इस पुस्तिका का मुख्य उद्देश्य यह है, अधिक से अधिक लोगों को मध्यस्थता के लिए प्रेरित करें और आरंभकों के लिए प्राथमिक मार्गदर्शन दे। जैसा कि सन्त पौलुस लिखते हैं, "यह उचित भी है और हमारे मुक्तिदाता ईश्वर को प्रिय भी," *(1 तिमथी 2,3)* "मैं इस सेवा कार्य के लिए आप सभी को आमन्त्रित करता हूँ इसलिए हम भरोसे के साथ अनुग्रह के सिंहासन के पास जायें, जिससे हमें दया मिले और हम कृपा प्राप्त करें, जो हमारी आवश्यकताओं में हमारी सहायता करेगी।" *(इब्रानियों 4,16)*

अध्याय एक
प्रार्थना का सामर्थ्य

जेनरेटर

कोई भी बड़े आयोजन के पीछे जेनरेटर एक गुप्त तथा अदृश्य वस्तु है, जो बिजली की ऊर्जा का वितरण करता है। अगर यह खराब हो जाये तो कार्यक्रम में बाधा आ जाती है। अगर वह कमज़ोर है तो कार्यक्रम सफल नहीं होगा। अगर यह शक्तिशाली है तो कार्यक्रम भी सफल होगा। फिर भी अगले दिन की खबरों में जेनरेटर का कहीं भी जिक्र नहीं होगा। मध्यस्थ प्रार्थना करनेवाले व्यक्ति भी जेनरेटर के समान हैं जो कलीसिया के लक्ष्यों को ऊर्जा प्रदान करते हैं और फिर भी गुप्त रहते हैं और गुप्त ही रहना चाहिए। मध्यस्थों का सबसे बड़ा संघर्ष अपने अहम् के साथ है जो सामने प्रकट होना चाहता है। एक विश्वासी मध्यस्थ को अदृश्य रहकर संघर्ष करना चाहिए। उन्हें प्रचुर मात्रा में आशीष मिलेगी। ''तुम्हारा पिता जो सब कुछ देखता है, तुम्हें पुरस्कार देगा।'' (मत्ती 6:4) अदृश्य मध्यस्थों का यह गुप्त स्वभाव उन्हें विनम्रता में बढ़ने के लिए मदद करेगा और विनम्रता पवित्रता का द्वार है।

प्रार्थना का सामर्थ्य

कुछ साल पहले मैंने अंग्रेजी अखबार 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' में 'प्रार्थना का सामर्थ्य' पर एक खबर पढ़ी थी। यह खबर एक अमेरिकी अस्पताल में वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग के बारे में छपी थी। कुछ वैज्ञानिकों के दल ने एक अस्पताल से उसमें दाखिल मरीजों के नाम की सूची उपलब्ध की। उन्होंने मरीजों की क्रम संख्या लेकर उन्हें विषम संख्या एवं सम संख्या के अनुसार विभाजित किया। विषम संख्या के मरीजों के नाम मध्यस्थ प्रार्थना करनेवाले एक दल के लोगों को दिया गया और उनसे अनुरोध किया कि वे उन रोगियों के लिए भक्तिमय तीव्र प्रार्थना करें। उन्हें अस्पताल का नाम नहीं दिया गया ताकि प्रार्थना दल के लोग उन रोगियों से सम्पर्क न कर सकें। एक हफ्ते बाद वे वैज्ञानिक उस अस्पताल में रोगियों

की जाँच करने आए। आश्चर्य की बात यह थी कि सम संख्या की तुलना में विषम संख्या के मरीज ज्यादा संख्या में चंगाई प्राप्त कर चुके थे और उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी। क्योंकि उनके लिए कोई प्रार्थना कर रहा था। सम संख्या के रोगियों के लिए कोई प्रार्थना करने वाला नहीं था।

अगर प्रार्थना में चंगाई का इतना सामर्थ है तो हम उसे दूसरों की चंगाई के लिए क्यों नहीं उपयोग करते हैं? पहला कारण है कि यह उद्योग को बढ़ावा नहीं देता है। दूसरा, अति धर्मनिरपेक्षता के कारण लोगों का ईश्वर पर और प्रार्थना की शक्ति पर भरोसा घटता जा रहा है। कुछ अति धर्मनिरपेक्ष मानसिकता के लोग ज्यादा समय प्रार्थना में गुजारने वालों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हैं। वे यह समझते हैं कि ये बेकार लोग हैं जो अपना समय प्रार्थना में बिताते हैं और दूसरों की भलाई के लिए कुछ नहीं करते। वे समझते हैं कि प्रार्थना संसार की सच्चाइयों से भाग जाने या मुँह मोड़ने का तरीका है। ऐसी टिप्पणियाँ उनकी अनभिज्ञता को प्रकट करती हैं, जो प्रार्थना के प्रभाव तथा ईश्वर के सामर्थ्य को नहीं जानते हैं। विश्वासियों पर ऐसी टिप्पणियों का बहुत अधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ऐसी कुछ टिप्पणियाँ मैंने अपने गुरुकुल के कुछ नवजवान तथाकथित प्रगतिशील प्रशिक्षकों से सुनीं थीं। और उसके नकारात्मक प्रभाव से मुक्त होने के लिए मुझे काफी संघर्ष करना पड़ा था। ऐसी टिप्पणियों के कारण ईश्वर के सामर्थ्य पर से मेरा भरोसा भी कमजोर पड़ने लगा था। एक पुरोहित बनने के बाद भी, मुसीबतों के वक्त मुझे ईश्वर के सामर्थ्य पर भरोसा करना मुश्किल जान पड़ता था। मानवीय समाधानों को ढूँढ़ना मेरे जीवन की परीक्षा बन गई। इस नकारात्मक प्रभाव से बाहर निकलने के लिए, एवं ईश्वर की प्रतिज्ञाओं तथा ईश्वर के सामर्थ्य पर भरोसा रखने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा ताकि मध्यस्थ प्रार्थना में मैं प्रवेश कर सकूँ। मैं फादर जॉन फुलनबाक एस. वी.डी. का एक अनुभव आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

''मनीला के प्रोविडेन्स अस्पताल के एक सुयोग्य डॉक्टर को मैं जानता था जो इटालियन स्टाइल का कैथलिक था, यानी वह गिरजाघर कम जाता था पर अपने तरीके से धार्मिक था। एक दिन हम एक काफी बीमार महिला को उस अस्पताल में लाए। वह आठ बच्चों की माँ थी। इस डॉक्टर ने उसका आपरेशन किया। फिर भी वह काफी गंभीर अवस्था में थी। मैंने उस डॉक्टर से पूछा कि क्या कोई आशा है? उन्होंने जवाब दिया, ''फादर अगर

हम कुछ कर सकते हैं तो वह है प्रार्थना।'' मेरे मुँह से काफी तीव्रता एवं उत्तेजना से जवाब निकला, ''क्या बस आप यही कर सकते हैं डॉक्टर?'' पर इस बार क्रोधित होने की बारी उनकी थी। उन्होंने मुझे पकड़ कर और मेरे चेहरे पर चीखते हुए कहा, ''आप एक पुरोहित हैं और आपको प्रार्थना पर विश्वास नहीं? आपको अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए। फादर, मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ। मैं एक बहुत अच्छा ईसाई तो नहीं हूँ, पर डॉक्टर की हैसियत और अनुभव से इतना जानता हूँ, कि अगर इस महिला में जीने की इच्छा है और उसे पाने के लिए वह संघर्ष करे तो मैं इतना जानता हूँ कि उसके पीछे प्रार्थना काम करेगा न कि दवा। जीने की तीव्र इच्छा और संकल्प के लिए और हारने से रोकने में केवल प्रार्थना ही प्रभाव डालती है। यदि ऐसा हो जाए तो मेरे लिए यह चमत्कार है। इसलिए अच्छा होता आप अभी से प्रार्थना करना शुरू कर दें...।'' मुझे याद है कि मैं शर्मिन्दगी से सिर झुकाकर वहाँ से खिसक गया। पर मैं गम्भीरता से प्रार्थना करने लगा और वह महिला फिर अच्छी हो गई।'' (John Fullenbach SVD, 'Proclaiming his Kingdom')

मानव की इच्छा शक्ति पर प्रार्थना के बड़े प्रभाव का एक सशक्त अनुभव हाल ही में मुझे प्राप्त हुआ, उसे आप लोगों के साथ बाँटना चाहता हूँ। कुछ ही दिनों पहले सान्त्वना के सहयोगी सदस्य यूसुफ मसीह के पिता पीटर मसीह के गुर्दे में कैंसर की बीमारी का पता चला। डॉक्टर लोगों ने सुझाव दिया कि पीटर मसीह का ऑपरेशन तुरन्त किया जाए और एक गुर्दे को निकाल लिया जाए। लेकिन ऑपरेशन में बड़ा जोखिम था। क्योंकि पीटर का हृदय रक्त को पम्प करने में केवल 20% ताकत रखता था। अपनी नाजुक स्थिति को जानते हुए पीटर निराशा में डूब गया। उन्होंने अपने सभी सगे-संबंधियों को अपने पास बुला लिया ताकि ऑपरेशन से पहले उनसे विदा ले सकें। इस बीच हम लोग उनके लिए बड़ी तीव्रता के साथ लगातार विनती कर रहे थे। हम सबको बड़ी खुशी हुई कि दो दिन बाद, यानी ऑपरेशन के दिन, पीटर मसीह ने जीने की आशा और दृढ़ संकल्प को पुनः प्राप्त किया और ऑपरेशन सफल हुआ। उन्होंने ऑपरेशन थिएटर जाते समय अपने परिवार के सदस्यों को ढांढ़स बँधाया कि वे चिन्ता न करें और कहा कि मैं कुछ ही दिनों में चंगा हो जाऊँगा। अपने लोगों की प्रार्थनाओं के प्रत्युत्तर में चमत्कार करनेवाले परमेश्वर की युगानुयुग महिमा हो।

विश्वासपूर्ण प्रार्थना में संसार को बदल डालने का सामर्थ्य है

प्रेरितों का धर्मसार इस प्रकार आरंभ होता है : ''हम स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता, सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर पर विश्वास करते हैं।'' अगर आप सच में ईश्वर में विश्वास करते हैं जो सर्वशक्तिमान और सदा प्यार करने वाला है, तो आप दूसरों के लिए विनती करना कभी भी नहीं छोड़ेंगे। संसार के लिए प्रार्थना करने की परवाह न करना यह संकेत देता है कि मनुष्यों और परिस्थितियों में बदलाव लाने की क्षमता रखने वाले ईश्वर पर आप भरोसा नहीं करते हैं। या आप सोचते हैं कि ईश्वर आपसे इतना प्रेम नहीं करता कि वह आपकी प्रार्थना नहीं सुनता।

''हमारा विश्वास यह कहता है कि हमारे अन्दर यह क्षमता है कि हम, लोगों की स्वतन्त्रता को ईश्वर के सहयोग द्वारा प्रभावित कर सकते हैं। ताकि लोग अपने आपको बदलने के लिए, मेल मिलाप के लिए बिना किसी दबाव से न्याय और भाईचारे की ओर कार्य करने के लिए इच्छुक बनें। यह सिर्फ ईश्वर कर सकता है। पर उनकी इच्छा यह थी कि हम प्रार्थना द्वारा उनकी ईश्वरीय उदारता में भागीदार बनें और सारी मानवजाति के लिए उनकी दया और करुणा में भी भागीदार बनें।'' *(S. Galilea, Following Jesus)*

''ईश्वर व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को कितना प्रभावित करता है इस पर विचार करके हमें प्रार्थनाओं की आवश्यकता की सीख लेनी है। प्रार्थना उस क्षेत्र तक पहुँचता है जहाँ स्वतंत्रता, विश्वास एवं प्रेम के क्षेत्र में मानवीय बुद्धि, मानवीय प्रयास एवं क्षमता बिल्कुल विफल हो जाते हैं।'' *(John Fullenbach SVD, 'Proclaiming his Kingdom')*

फादर जॉन का निम्न अनुभव प्रार्थना की शक्ति का वर्णन करता है।

''कुछ साल पहले मुझे एक प्रसिद्ध भविष्यवक्ता महिला से मिलने का अवसर मिला। मैंने उससे पूछा कि ऐसा कैसे हो सकता है कि आपकी बहुत सी भविष्यवाणियाँ सच नहीं साबित हुईं।'' उसने मुझसे पूछा, ''फादर क्या आप प्रार्थना में विश्वास करते हैं?'' मैंने कहा, ''हाँ जरूर''। ''अच्छा'', उसने कहा, ''तब आपको यह पता होना चाहिए कि प्रार्थना किसी भी सम्भावित घटना को बदल सकती है। अगर कोई नकारात्मक प्रकार की भविष्यवाणी सच नहीं हुई तो उसका कारण यह हो सकता है कि कुछ लोग

लगन, दृढ़ता एवं निरंतरता से प्रार्थना कर रहे थे कि ऐसी नकारात्मक घटना या अनहोनी न हो जाए। मैं एक धार्मिक व्यक्ति हूँ और मेरे अनुभव ने मुझे विश्वास दिलाया है कि प्रार्थना बड़ी प्रभावशाली है। प्रार्थना घटनाओं की प्रवाह को बदल डालती है। और ऐसा सम्भव करने वाला यही एकमात्र स्रोत है। प्रार्थना का प्रभाव मनुष्य के हृदय की गुप्त जगहों पर होता है जहाँ मनुष्य अपनी योजनाएँ बनाता है, जो मानव इतिहास की घटनाओं को निर्धारित करती है।'' *(John Fullenback SVD, 'Proclaiming his Kingdom')*

प्रार्थना में निश्चय ही शक्तिशाली प्रभाव है। पर यह कोई स्वचालित या यान्त्रिक प्रभाव नहीं है। प्रार्थना का प्रभाव न तो ए.टी.एम. कार्ड की तरह है, जिसे आपने डाला, सही बटन दबाया और परिणाम निकल आया। कंप्यूटर के इस युग में हमारी सोच स्वचालित और तुरंत के परिणामों से प्रभावित और सीमित है। कई बार लोग प्रार्थना की माँग यह सोचकर करते हैं कि उन्हें तुरन्त जवाब मिले। उसके बाद वे निराशा में डूब जाते हैं। प्रार्थना का अर्थ है : प्रेम से ईश्वर पर भरोसा करना, धैर्य से प्रतीक्षा करना और निरन्तर ईश्वर की इच्छाओं की खोज करना। यह जीवन का मार्ग बन जाता है। यह इतनी शक्तिशाली है कि लोगों के जीवन और परिस्थितियों में बदलाव एवं आशीष ला सकती है।

प्रार्थना आपके संगठन की कार्यशैली को बेहतर बना सकती है

प्रार्थना एक शक्तिशाली माध्यम है जो आपकी संस्था, संगठन, समुदाय, दल या कम्पनी को सफलतापूर्वक क्रियाशील कर सकती है। अगर लीडर, मैनेजर या विभाग का शीर्ष, पक्का विश्वास, प्रार्थना एवं करुणामय प्रेम करने वाला हो तो संगठन की कार्यशैली और क्षमता बहुत बढ़ेगी।

अथोस नामक शहर के संत पंतेलेइमोन मठ के अधीन एक कारखाना है जिसका प्रभारी उसी मठ के संन्यासी सिलौने थे। एक बार एक व्यक्ति ने उनसे पूछा, ''फादर, ऐसा क्यों है कि आपके मज़दूर इतना अच्छा काम कर रहे हैं, और आपको कभी उनका निरीक्षण नहीं करना पड़ता है?''

उन्होंने उत्तर दिया, ''मैं नहीं जानता हूँ। मैं सिर्फ यही बता सकता हूँ कि आज की सुबह कैसे मुझे कार्य करना है। मैं इन ईमानदार लोगों के लिए प्रार्थना किये बिना कारखाने में प्रवेश नहीं करता हूँ। मैं करुणा और प्यार भरे हृदय के साथ उनसे मिलता हूँ। और जब मैं कारखाने में प्रवेश करता हूँ तो मैं उनसे इतना प्रेम करता हूँ कि मेरी आत्मा प्यार के आँसुओं से भर

जाती है। मैं प्रत्येक को उस दिन का काम बाँटता हूँ और जब तक वे उस काम को करते रहते हैं मुझे उनके लिए प्रार्थना करनी है। इसलिए मैं अपने कक्ष में वापस जाता हूँ और प्रत्येक के लिए प्रार्थना करता हूँ। मैं अपने आपको प्रभु के समक्ष रखता हूँ और उनसे कहता हूँ, ''हे मेरे ईश्वर निकोलस को याद कर, वह जवान है और बस बीस साल का है। वह अपनी बीबी को जो उससे भी कम उम्र की है और उसके पहलौठे बच्चे को गाँव में छोड़कर आया है। क्या आप उसकी विपत्ति की कल्पना कर सकते हैं जिसके कारण विवश होकर वह परिवार को छोड़कर आया है। वह गाँव के अपने काम-धंधे से बीबी-बच्चे का पालन नहीं कर पाता था।'' *(Jean Lafrance, 'Give Me A Living Word')*

विश्वास का जीवन, प्रार्थना तथा प्यार आपके परिवार और आपके कार्यक्षेत्र की दयनीय अवस्था को बदल सकते हैं। क्या आप अपने परिवार में बदलाव लाना चाहते हैं? यह सिर्फ प्रार्थना के द्वारा ही संभव है।

प्रभु की प्रतिज्ञाएँ

आइये हम पवित्र वचन में ईश्वर की कुछ प्रतिज्ञाओं को देखें। ईश्वर पर आप भरोसा कर सकते हैं क्योंकि आपको प्यार करने वाला ईश्वर ने प्रतिज्ञा की है और उन प्रतिज्ञाओं को पूरा करने का सामर्थ्य ईश्वर में है। आप हर रोज कुछ देर ईश्वर की इन प्रतिज्ञाओं को दृढ़ विश्वास के साथ दुहरा सकते हैं। ईश्वर के वचन को अपने हृदय की गहराइयों में आने दीजिए। इससे ''जिस ईश्वर का सामर्थ्य हम में क्रियाशील है और जो वे सब कार्य सम्पन्न कर सकता है, जो हमारी प्रार्थना और कल्पना से अत्यधिक परे है, उसी ईश्वर पर भरोसा करने के लिए आपको मदद मिल सकती है।'' *(एफीसी 3,20)*

2 इतिहास 7, 14: *तब यदि मेरी अपनी प्रजा विनयपूर्वक प्रार्थना करेगी, मेरे दर्शन चाहेगी और अपना कुमार्ग छोड़ देगी, तो मैं स्वर्ग से उसकी सुनूँगा, उसके पाप क्षमा करूँगा और उसके देश का कल्याण करूँगा।*

मत्ती 7, 7: *माँगो और तुम्हें दिया जायेगा, ढूँढ़ो और तुम्हें मिल जायेगा; खटखटाओ और तुम्हारे लिए खोला जायेगा।*

1 योहन 5,14-15: *हमें ईश्वर पर यह भरोसा है कि यदि हम उसकी इच्छानुसार उससे कुछ भी माँगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। यदि हम यह*

जानते हैं, तो हम यह भी जानते हैं कि हमने जो कुछ माँगा है, वह हमें मिल गया है।

मारकुस 11,24: *इसलिए मैं तुम से कहता हूँ–तुम जो कुछ प्रार्थना में माँगते हो, विश्वास करो कि वह तुम्हें मिल गया है और वह तुम्हें दिया जाएगा।*

योहन 15,7: *यदि तुम मुझ में रहो और तुम में मेरी शिक्षा बनी रहती है, तो चाहे जो माँगो, वह तुम्हें दिया जायेगा।*

योहन 14,12-13 : *मैं तुम लोगों से यह कहता हूँ जो मुझ में विश्वास करता है, वह स्वयं वे कार्य करेगा, जिन्हें मैं करता हूँ। वह उन से भी महान् कार्य करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूँ। तुम मेरा नाम लेकर जो कुछ माँगोगे, मैं तुम्हें वही प्रदान करूँगा, जिससे पुत्र के द्वारा पिता की महिमा प्रकट हो।*

मत्ती 18,19-20 : *मैं तुम से यह भी कहता हूँ-यदि पृथ्वी पर तुम लोगों में दो व्यक्ति एकमत होकर कुछ भी माँगेंगे, तो वह उन्हें मेरे स्वर्गिक पिता की ओर से निश्चय ही मिलेगा।*

योहन 16,23-24 : *मैं तुम लोगों से कहता हूँ-तुम पिता से जो कुछ माँगोगे, वह तुम्हें मेरे नाम पर वही प्रदान करेगा। अब तक तुमने मेरा नाम लेकर कुछ भी नहीं माँगा है। माँगों और तुम्हें मिल जायेगा, जिससे तुम्हारा आनन्द परिपूर्ण हो।*

योहन 15,7-8 : *यदि तुम मुझ में रहो और तुम में मेरी शिक्षा बनी रहती है, तो चाहे जो माँगों, वह तुम्हें दिया जायेगा। मेरे पिता की महिमा इस से प्रकट होगी कि तुम लोग बहुत फल उत्पन्न करो और मेरे शिष्य बने रहो।*

योहन 15,16: *तुमने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें इसलिए चुना और नियुक्त किया कि तुम जा कर फल उत्पन्न करो, तुम्हारा फल बना रहे, और तुम मेरा नाम लेकर पिता से जो कुछ माँगो, वह तुम्हें वही प्रदान करे।*

~~~~~~

प्रार्थना करो, मध्यस्थता करो!

प्रार्थना वह शक्ति है जो संसार को रूपान्तरित कर देती है।

ईश्वर आपको इस रुपान्तरण का प्रतिनिधि बनाना चाहता है।

~~~~~~

अध्याय दो

मध्यस्थता की प्रार्थना

मध्यस्थता क्या है?

''मध्यस्थता एक याचना है जो हमें प्रभु येशु के समान प्रार्थना करना सिखाती है।'' *(Catechism of the Catholic Church 2634)*

अब्राहम के समय से ही मध्यस्थता अर्थात् दूसरों की ओर से माँगना, ईश्वर की कृपा से जुड़े हृदय की विशेषता है। कलीसिया की स्थापना के बाद ख्रीस्तीय मध्यस्थता प्रभु यीशु की मध्यस्थता में भागीदारी करती है, जो संतों की एकता का चिह्न है। मध्यस्थ प्रार्थना में, जो प्रार्थना करता है ''वह न कवेल अपनी ज़रूरतों को देखता है पर दूसरों की ज़रूरतों को भी देखता है। उनकी भी जो उन्हें हानि पहुँचाते हैं, और उनके लिए भी वह प्रार्थना करता है।'' *(Catechism of the Catholic Church 2635)*

ईश्वर चाहता है कि हम मनुष्यों की तरफ से उनकी परिस्थितियों में मध्यस्थ प्रार्थना करते हुए उनके मुक्ति कार्य में भागीदारी करें। पवित्र वचन कहता है कि ईश्वर ने ''एक ऐसे व्यक्ति की खोज की, जो मोर्चाबन्दी करे और जो मेरे सामने दीवार पर खड़ा होकर उसकी रक्षा करे।'' *(एज़ेकी 22,30)* ''उसने देखा कि किसी में भी पुरुषार्थ नहीं रहा। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कोई भी न्याय के लिए संघर्ष नहीं करता...'' *(इसायाह 59:16)* ईश्वर चाहता है कि कोई मध्यस्थता का संघर्ष करे। ईश्वर चाहता है कि हम माँगे क्योंकि ईश्वर दैवी-मानुषिक साझेदारी के सिद्धान्तों पर कार्य करता है। इसलिए प्रभु येशु ने हमें सिखाया है ''माँगों और तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो और तुम्हें मिल जायेगा; खटखटाओ और तुम्हारे लिए खोला जायेगा।'' *(मत्ती 7,7)*

मध्यस्थता अब्बा-अनुभव का फल है

प्रभु येशु में विश्वास द्वारा मुक्ति की अनुभूति से अब्बा पिता की अनुभूति प्रस्फुटित होती है। पिता की सही अनुभूति को येशु ही प्रकट सकता है। वह कहता हैं ''पिता को कोई भी नहीं जानता, केवल पुत्र जानता है और वही,

जिस पर पुत्र उसे प्रकट करने की कृपा करे।'' *(मत्ती 11,27)* मध्यस्थता अब्बा-अनुभव (अब्बा पिता के साथ एकात्मकता के अनुभव) का फल है। जब कोई व्यक्ति ईश्वर को अब्बा पिता के रूप में अनुभव करता है, तो उस व्यक्ति के व्यवहार में आश्चर्यजनक बदलाव आता है। पूरी मानव जाति का हर व्यक्ति उसका भाई या बहन बन जाता है। निम्नलिखित शब्दों द्वारा, भजनकर्ता ऐसे व्यवहारों के बारे में कहते हैं। भजनकर्ता को हानि पहुँचाने वालों का वह स्वयं अधिक ध्यान रखता है और उनके लिए प्रार्थना करता है, मानो कि वे उनका दोस्त या भाई हो। ''जब वे बीमार थे, तब मैं टाट ओढ़े, उपवास करते हुए तप करता और हृदय से प्रार्थना करता। मेरा व्यवहार ऐसा था, मानो आत्मीय या भाई बीमार हो। मैं ऐसा निरुत्सार और उदास था, जैसा कोई माता के लिए शोक मनाता हो।'' *(स्रोत 35,13-14)*

जीवन की सम्पूर्ण वास्तविकता और संसार में दुःख कष्ट की वास्तविकता का निर्भय सामना करने से, कोई व्यक्ति दूसरों के दुःख कष्टों के प्रति संवेदनशीलता के गुण को विकसित करता है। मनुष्य अपने आपको संसार के दुःख तकलीफों से अलग रखना चाहता है या फिर दुःख संकट की खबरों को पढ़कर या टेलीविज़न में खबर देखकर सन्तुष्ट रहने की कोशिश करता है। क्योंकि जिनका ईश्वर में ठोस विश्वास नहीं है, उनको दूसरों के दुःख-तकलीफ और दुर्दशा पर घृणा एवं निराशा होती है। हमें बाहर निकलकर दुःख भोगनेवालों की खोज स्वयं करनी चाहिए और दूसरों के दुःख-तकलीफों से प्रभावित होने की ज़रूरत है। दूसरों के कष्ट द्वारा पीड़ित होने पर मध्यस्थ प्रार्थना निकल आती है।

जब ईश्वर अब्बा पिता बनता है और कोई व्यक्ति अपने आपको ईश्वर का पुत्र या पुत्री समझता है, तो वह प्यारे अब्बा के गहरी इच्छाओं और चिन्ताओं को अपनाता है, जैसे प्रभु येशु ने किया। प्रभु प्रकट करते हैं ''मेरा स्वर्गिक पिता नहीं चाहता कि उन नन्हों में से एक भी खो जाये।'' (मत्ती 18,14)। ''ईश्वर ने संसार को इतना प्यार किया कि उसने उसके लिए अपने एकलौते पुत्र को अर्पित कर दिया, जिससे जो कोई उसमें विश्वास करे, उसका सर्वनाश न हो, बल्कि वह अनन्त जीवन प्राप्त करे।'' (योहन 3,16)। ''निन्यानबे धर्मियों की अपेक्षा, जिन्हें पश्चात्ताप की आवश्यकता नहीं है, एक पश्चात्तापी पापी के लिए स्वर्ग में अधिक आनन्द मनाया जायेगा।'' (लूकस 15:7)। सन्त पौलुस भी इस प्रकार लिखते हैं, ''ईश्वर चाहता है कि सभी मनुष्य मुक्ति प्राप्त करें और सत्य को जानें।'' (1 तिमथी 2, 4) दूसरों

के प्रति प्रबल प्रेम, दूसरों की भलाई के लिए गहरी चिन्ता की अभिव्यक्ति मध्यस्थता है। सबकी मुक्ति के लिए ईश्वर की योजना एवं इच्छा की मानवीय अभिव्यक्ति भी मध्यस्थता है।

पाप की वास्तविकता एवं शरीर की दुर्बलताओं के प्रति जागरूकता

मारकुस 14, 38: ''जागते रहो और प्रार्थना करते रहो; जिससे तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तत्पर है, परन्तु शरीर दुर्बल।''

''शरीर की दुर्बलता'' का संकेत यहाँ शरीर के 'प्रलोभनों' से नहीं है, पर मनुष्य जो शरीर के बोझ, उसकी नाजुकता, उसके संघर्ष, उसके उपकर्ष, परीक्षण, कष्ट एवं मृत्यु के अधीन रहनेवाले मनुष्य की दुर्बलता से है। (शरीर के बोझ की ओर इंगित करते हुए मैं मानव शरीर की सुन्दरता एवं बल को कम नहीं आंकना चाहता हूँ।) जब शब्द शरीरधारी हुआ तो येशु शरीर के बोझ के अधीन हो गए। वह पाप को छोड़, हर बात में हमारी तरह बन गए। ईश्वर की योजनाओं को पूरा करने में बाधा बनने वाले शरीर के बोझ को अनुभव करते हुए येशु ने उस विशेष कृपा के लिए प्रार्थना की जो संसार की मुक्ति के लिए ईश्वर की योजना को पूरा कर सकती थी। शरीर की दुर्बलताओं से अवगत होने के लिए, उस विशेष कृपा की मांग करते हुए प्रार्थना में ईश्वर को पुकारने तथा जीवन में ईश्वर की योजना को पूरा करने, येशु अपने हर शिष्य को आमन्त्रित करता है। शरीर की दुर्बलताओं का बोध शिष्यों की मदद करता है ताकि शिष्य दूसरों की दुर्बलताओं के प्रति सहानुभूति रख सके, और उनके ऊपर ईश्वर की दया और कृपा के लिए प्रार्थना तथा मध्यस्थता कर सकें। जैसे ही यह बोध गहरा होता है, दूसरे जो पाप के गर्त में हैं उसमें अपनी पहचान पाकर और उनके पाप को अपना पाप समझते हुए येशु का अनुयायी ईश्वर की दया के लिए पुकार सकता है।

एक दिन किसी ने यहूदी गुरु रब्बी सूज़ा से पूछा, ''जो भी आपके पास आए उन सभी ने पश्चात्ताप करके अपना रास्ता बदल लिया। यह कैसे संभव हुआ?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''जो व्यक्ति बिना पश्चात्ताप किए मेरे पास आता है, मैं उसके पाप की गहराइयों में उतर जाता हूँ। और जब मैं उसकी आत्मा की तह को मेरी अपनी गहराई के साथ बाँध देता हूँ, तब मैं उसके पापों के लिए पश्चात्ताप करने लगता हूँ। तब वह मजबूरन मेरे साथ पश्चात्ताप करता है क्योंकि हम एक बन जाते हैं। (Jean Lafrance, "Give Me A Living Word)

आत्मा के लिए प्यास

अब्बा–अनुभव तथा पाप की वास्तविकता और शरीर की दुर्बलताओं के प्रति बोध, आत्माओं की मुक्ति के लिए एक तीव्र इच्छा स्थापित करता है जो 'आत्मा के लिए प्यास' या 'आत्मा के लिए उत्साह' कहलाती है। ये अभिव्यक्तियाँ, आधुनिक ईसाइयों की शब्दावली से गायब हो गई हैं। पर यह मध्यस्थों के लिए एक अत्यन्त परिचित शब्द है। एक मध्यस्थ को आत्मा की प्यास की कृपा के लिए प्रार्थना एवं प्रबल इच्छा करनी चाहिए। संत पापा जॉन पौल ने अपने प्रेरितिक उपदेश में 'आत्मा के लिए उत्साह' नामक बहुमूल्य कृपा के बारे में बताया है। मसीह इसलिए आए "न केवल राष्ट्र के लिए, बल्कि इसलिए भी कि वे ईश्वर की बिखरी हुई सन्तान को एकत्र कर लें" *(योहन 11, 52)*। वह भला गड़ेरिया जो अपनी भेड़ों को जानता है, उन्हें ढूँढ़ निकालता है और उनके लिए अपने प्राण दे देता है। जिनके अन्दर मिशनरी धर्मोत्साह है, वे आत्मा के लिए ख्रीस्त के प्रबल प्रेम को महसूस करते हैं तथा कलीसिया को प्यार करते हैं, जैसा कि मसीह ने किया।

मिशनरी को आत्मा की उत्साह से प्रेरणा मिलती है। वह उत्साह जो ख्रीस्त की अपनी दयालुता से प्रेरित होता है, जो सम्बद्धता, कोमलता, निष्कपटता, उपलब्धता और लोगों की समस्याओं में दिलचस्पी का रूप लेता है। येशु का प्यार बहुत गहरा है : "वे तो स्वयं मनुष्य का स्वभाव जानते थे" *(योहन 2, 25)* उन्होंने मुक्ति की भेंट देकर सबों को प्यार किया और जब वह भेंट अस्वीकृत किया गया तब उसने दुःख भोगा। (Redemptoris Missio 89)

हेनरी प्रान्ज़ीनी एक कुख्यात अपराधी था। उसका मुकदमा 9 जुलाई, 1887 को खुला और 13 जुलाई को प्राणदण्ड के आदेश के साथ वह मुकदमा समाप्त हो गया। लिसियू की संत तेरेसा को उसके मन परिवर्तन में दिलचस्पी हुई। प्रान्ज़ीनी को 31 अगस्त, 1887 को फाँसी पर चढ़ाया गया। संत तेरेसा ने आत्मा के लिए प्यास की विशेष कृपा का वर्णन किया है जो उसने प्रभु से ग्रहण किया था। इसी कृपा ने उसे प्रान्ज़ीनी के मन परिवर्तन के लिए प्रार्थना की ओर प्रेरित किया।

"उस ज्योति की रात को मेरे जीवन की तीसरी अवधि आरंभ हुई, जो सबसे सुन्दर और स्वर्ग से कृपाओं से पूर्ण भरी हुई अवधि थी। जो काम मैंने दस सालों में नहीं किया उसे येशु ने एक क्षण में कर दिया। येशु ने मेरी

अच्छी इच्छाशक्ति के साथ अपनी संतृप्ति जताई। मैं उनसे प्रेरित पेत्रुस की तरह कह सकती थी ''स्वामी, मैंने रात भर मछली पकड़ने की कोशिश की पर कोई पकड़ नहीं पाई।'' वे अपने शिष्यों से ज़्यादा मुझ पर दयालु थे, उन्होंने खुद जाल लेकर, उसे फेंका और मछलियों से भरकर बाहर निकाला। उन्होंने मुझे आत्माओं का मछुआरा बना दिया। मैंने अपने अन्दर पापियों के मन परिवर्तन के लिए काम करने की एक प्रबल इच्छा को अनुभव किया, ऐसी इच्छा को मैंने पहले कभी इतना अत्यधिक नहीं महसूस किया था।

मैंने अपनी आत्मा में दया को प्रवेश करते हुए महसूस किया, अपने आपको भूल कर दूसरों को खुश रखना सीखा, और तब से मैं खुश हूँ। एक रविवार को जब मैं क्रूसित येशु की तस्वीर को देख रही थी। अचानक मैंने देखा कि येशु के पवित्र हाथों में से एक हाथ से लहू बह रहा है। मैं स्तब्ध हो गई। मैं एकदम दु:ख से भर गई, यह सोचकर कि यह लहू जो ज़मीन पर गिर रहा है, उसे बटोरने के लिए कोई दौड़कर नहीं आ रहा है। मैंने निश्चय किया कि मैं आत्मिक रूप से क्रूस के कदमों पर रहूँ और स्वर्गिक ओस को ग्रहण करूँ। मैं समझ गई कि अब मुझे दूसरी आत्माओं पर उसे उँड़ेलना है। क्रूस पर प्रभु येशु की पुकार कि ''मैं प्यासा हूँ।'' बार-बार मेरे हृदय में गूँज रही थी। ये शब्द मेरे अन्दर एक अज्ञात और जीवन्त ज्वाला प्रज्वलित कर रहे थे। मैं अपने प्रिय की प्यास बुझाना चाह रही थी पर आत्माओं की प्यास से मैं स्वयं भर गई। पुरोहितों की आत्माएँ नहीं बल्कि कठोर पापियों की आत्माएँ मुझे आकर्षित कर रही थीं। उन्हें अनन्त आग से छीनकर बचाने की प्रबल इच्छा से मैं जूझ रही थी।

मेरे उत्साह को जगाने के लिए ईश्वर ने दिखाया कि मेरी ये इच्छाएँ उन्हें प्रिय हैं। मैंने एक बड़े अपराधी के बारे में सुना जिसे किसी कुख्यात अपराध के कारण मृत्युदण्ड मिला था। सभी तथ्य इस बात का संकेत दे रहे थे कि वह बिना पश्चात्ताप किए मर जाएगा। मैं हर हाल में उसे नरक में जाने से बचाना चाहती थी, और इस लक्ष्य को पाने के लिए मैं हर उपाय अपनाने लगी। मैं अपने आप कुछ नहीं कर सकती थी। मैंने ईश्वर के सम्मुख प्रभु के अनन्त पुण्यफलों को और कलीसिया के खज़ानों को अर्पित किया। और अन्त में मैंने अपनी बहन सेलीन से विनय किया कि वह मेरे इन निवेदनों के लिए मिस्सा बलिदान चढ़ाए। मेरे अन्दर स्वयं गिरजाघर जाकर यह कहने की हिम्मत नहीं थी। इस डर से कि यह निवेदन कुख्यात अपराधी प्रान्ज़ीनी के लिए है, सुनकर ठुकरा दिया जाएगा। सच कहने के

लिए मैं मज़बूर हो जाती। मैं सेलीन को भी नहीं बताना चाहती थी, पर उसने मुझसे बड़े प्यार से दबाव डालकर पूछ लिया। मुझे उसे अपना रहस्य बताना पड़ा। हँसने के बजाय उसने कहा कि वह भी उस पापी के मन परिवर्तन के लिए मेरी मदद करेगी। मुझे अच्छा लगा और मैंने यही चाहा कि हर प्राणी मिलकर इस अपराधी पर दया के लिए मेरे साथ प्रार्थना करे।

मेरे अन्दर पूर्ण विश्वास था कि हमारी यह याचना पूरी की जायेगी। परन्तु इस पापी के लिए प्रार्थना करने की हिम्मत पाने हेतु मैंने ईश्वर से कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि तू उस बदनसीब प्रान्ज़ीनी को ज़रूर क्षमा कर देगा। मेरा विश्वास था कि यदि बिना पाप स्वीकार किए या पश्चात्ताप किए उसकी मृत्यु होगी तो भी ईश्वर उसे क्षमा करेगा। मुझे येशु की दया पर पूर्ण भरोसा था। फिर भी मैं अपनी सान्त्वना के लिए मैं प्रभु से पश्चात्ताप का चिन्ह माँग रही थी।

मेरी प्रार्थना अक्षरशः सुनी गई। पापा ने अखबार पढ़ने के लिए हमें मना किया था। इसके बावजूद मैंने प्रान्ज़ीनी की खबर पढ़ी। मैंने यह नहीं सोचा कि मैं पापा की आज्ञा का उल्लंघन कर रही हूँ। मृत्युदण्ड के एक दिन पश्चात 'ला क्रोई' अखबार को मैंने उठाया। मैंने उसे खोला और क्या देखा? खबर पढ़ते ही मेरे आंसू बह निकले और मुझे अपने आंसुओं को छिपाना पड़ा। प्रान्ज़ीनी पाप स्वीकार के लिए नहीं गया था। मृत्युदण्ड के लिए तख्त पर चढ़ा। वह अपना सिर दे ही रहा था कि अचानक उसे एक प्रेरणा मिली। वह मुड़ा और बगल में खड़े पुरोहित के हाथों से क्रूस को लेकर येशु के पवित्र घावों को तीन बार चूमा। तब उसने मृत्यु को स्वीकारा। उसकी आत्मा उसके शरीर से निकल गया ताकि वह उस प्रभु की उदार मुक्ति को पा सके जो यह कहता है कि "निन्यानबे धर्मियों की अपेक्षा, जिन्हें पश्चात्ताप की आवश्यकता नहीं है, एक पश्चात्तापी पापी के लिए स्वर्ग में अधिक आनन्द मनाया जायेगा।" ("Story of a Soul," the autobiography of St. Therese of Lisieux)

अध्याय तीन

मध्यस्थता का सेवा कार्य अनन्त है

एक सेवाकार्य जो कभी भी नहीं छीना जाएगा।

मारथा और मरियम के प्रसंग में, येसु ने कहा कि 'मरियम ने सबसे उत्तम भाग चुन लिया है; वह उस से नहीं छीना जाएगा।' (लूकस 10, 42)। मध्यस्थता सबसे उत्तम भाग है और वह कभी भी नहीं छीना जायेगा। प्रचार छीना जा सकता है। एक समय आयेगा जब हर तरह की गतिविधियाँ समाप्त हो जायेंगी। बहुत सारे सक्रिय धर्मसंघियों और पुरोहितों को बुढ़ापे में और बीमारी की अवस्था में बेचैन और कटुता से भर जाते हुए देखा जाता है, क्योंकि उस अवस्था में वे सार्थक सेवाकार्य नहीं कर पाते हैं। जो भी उन्होंने करना सीखा था उनसे ले लिया गया। बहुत सारे प्रौढ़ व्यक्तियों को आनन्दित जीवन बिताते हम देखते हैं। चाहे वे बीमार हो या और बिस्तर में हो फिर भी लोग उन्हें खोजते हैं। क्योंकि वे लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं। ईश्वर चाहते हैं कि आप इन जैसे बनें। मध्यस्थ बनने की कृपा के लिए आप प्रार्थना कीजिए। हर रोज मध्यस्थता करना शुरू कीजिए और आप बुढ़ापे और बीमारी में भी खुशहाल और विजयी जीवन बिताएँगे। यह न सोचे कि जब आप बूढ़े होंगे और सेवामुक्त होंगे, उसके बाद प्रार्थना करेंगे। यदि स्वस्थ और सक्रिय होकर आप प्रार्थना नहीं करते हैं तो बुढ़ापे और बीमारी में आप प्रार्थना नहीं कर पायेंगे। जैसा कि जॉन फुलनबाक ने लिखा है ''प्रार्थना न करने की सजा है आखिरकार प्रार्थना की असमर्थता।'' इसलिए आज से ही प्रार्थना करने की सोच बना लें।

मृत्युशय्या पर मध्यस्थता का मिशन

ब्रदर देवनन्दन इन्डियन मिशनरी सोसाइटी का एक नव जवान सदस्य था और दर्शनशास्त्र का विद्यार्थी था। उनकी जवानी में ही उन्हें आँत का कैन्सर हो गया और उनके जीवन में अंधकार छा गया। इलाज करने पर उनका कैन्सर और अधिक फैलने से रुक गया और उन्होंने अपनी पढ़ाई

जारी रखी। कुछ साल बाद उनका कैन्सर फिर सक्रिय हो गया और तीव्रता से बढ़ने लगा। उन्हें पढ़ाई वहीं रोकनी पड़ी। वे असह्य शारीरिक पीड़ा एवं मानसिक यन्त्रणा के शिकार हो गये। वे दिल्ली के शांति अवेदना केन्द्र में लाये गये।

जैसे ही उनका अन्तिम समय पास आ रहा था उन्होंने आध्यात्मिकता को गहरे रूप से अनुभव किया। इससे उनका जीवन ही बदल गया। अपनी असह्य पीड़ा में उन्होंने क्रूसित प्रभु का दर्शन देखा। उन्होंने क्रूस से लहू का एक बूँद, अपने मुँह पर गिरते हुए महसूस किया। इस अनुभव द्वारा बोलने की उनकी तकलीफ दूर हो गई। प्रभु ने उनको मध्यस्थता का कार्य सौंपा। प्रभु से उनका यह जवाब था, ''यह कार्य मैं कैसे कर सकता हूँ जबकि मेरे जीवन का अन्त बिल्कुल निकट है।'' पर प्रभु ने फिर उनसे इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए कहा। प्रभु ने उनसे कहा कि जो भी समय उन्हें दिया गया है, उस दौरान वे संसार के लिए, कलीसिया के लिए, आई. एम.एस. समुदाय के लिए तथा सभी पीड़ितों के लिए प्रार्थना करें। और तभी से वे सभी बातों के लिए ईश्वर की स्तुति करने लगे तथा सभी लोगों के लिए मध्यस्थ प्रार्थना करने लगे। उनका जीवन एक प्रबल प्रार्थना था। वे प्रभु को अपना दर्द और पीड़ा समर्पित करते हुए प्रार्थना करते थे।

26 अक्तूबर 2006 को उन्होंने अपना सेवाकार्य पूरा किया और वे परमपिता के घर चले गए। उनका यह प्रस्थान एक सुखद घटना थी। मृत्यु से एक दिन पहले उन्होंने अपने सभी करीबी रिश्तेदारों से टेलिफोन पर बात की। 26 की सुबह को, वे अपनी शारीरिक पीड़ा को प्रभु को समर्पित करते हुए लोगों के लिए प्रार्थना करते रहे। जो भी उनसे मिलने आ रहे थे देवनन्दन उनसे विदा लेने लगे। विशेषकर उन सिस्टर और ब्रदर लोगों से जो उनकी देखभाल कर रहे थे। उन सबको देवनन्दन ने अलविदा कहा। शाम को करीब 4.05 बजे उनकी सेवा में लगी सिस्टर अन्दर आई। देवनन्दन ने मुस्कुराते हुए सिस्टर का स्वागत किया और हाथ मिलाते हुए अलविदा बोले और तब उनकी साँस हमेशा के लिए रुक गयी। प्रभु येसु मृत्यु और पीड़ा को एक सुन्दर एवं फलदायक घटना बना देता है। यह मुझे पवित्र वचन में एक विजयी पुकार की याद दिलाती है: ''मृत्यु। कहाँ है तेरी विजय? मृत्यु! कहाँ है तेरा दंश?'' (1 कुरिन्थि 15, 55)। येशु ने देवनन्दन के जीवन की

अन्तिम पीड़ा के समय, उसे कैन्सर से पीड़ित एक बीमार व्यक्ति से बदलकर मध्यस्थता के मिशनरी के रूप में बना दिया। अब वे स्वर्ग में प्रभु येशु के साथ मिलकर पूरे संसार के लिए निरन्तर प्रार्थना कर रहे होंगे। येसु ने मरियम का पक्ष लेते हुए मारथा से यही कहा था ''यह कार्य उससे कभी नहीं छीना जायेगा।''

अध्याय चार

मध्यस्थता बुराई के विरुद्ध आध्यात्मिक संघर्ष है

जैसे ही आप मध्यस्थता के कार्य में आगे बढ़ेंगे आप यह जान जायेंगे कि मध्यस्थता, शैतान के राज्य के विरुद्ध एक आध्यात्मिक संघर्ष है। पवित्र वचन कहता है, ''क्योंकि हमें निरे मनुष्यों से नहीं, बल्कि इस अन्धकारमय संसार के अधिपतियों, अधिकारियों तथा शासकों और आकाश की दुष्ट आत्माओं से संघर्ष करना पड़ता है।'' *(एफीसी 6, 12)*। इन पदों के आधार पर मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आप शैतान पर चिल्लाएँ और उसे ललकारें। परन्तु शत्रु की ताकत और उसकी कपटी चालों से आप अवगत रहें। याद रखें, प्रभु आपके साथ है और उनका अपार सामर्थ्य आपके लिए है। इसलिए ''आप लोग प्रभु से और उसके अपार सामर्थ्य से बल ग्रहण करें'' *(एफीसी 6, 10)*। कई बार लोग यह सोचते हैं कि जिन्होंने उनको ठेस पहुँचाया है वही उनके शत्रु हैं और वे सारा जीवन उन्हीं लोगों से संघर्ष करने में बिता देते हैं। शैतान जो वास्तव में शत्रु है गुप्त रहता और स्वतन्त्रता से घूमता फिरता है। क्षमा न करने से शैतान हमारे जीवन में प्रवेश करता है। पवित्र वचन *(एफीसी 4, 26)* हमें सचेत करता है कि हम शैतान को मौका न दे। अगर आप वास्तविक शत्रु को पहचान लेंगे तो आप को कष्ट देने वाले अपने भाई या बहन को आप क्षमा कर सकेंगे। तब ''शान्ति का ईश्वर शीघ्र ही शैतान को आपके पैरों तले कुचल देगा।'' *(रोमी 16, 20)* ''आप लोग ईश्वर के अधीन रहें। शैतान का सामना करें और वह आपके पास से भाग जायेगा। ईश्वर के पास जायें और वह आपके पास आयेगा।'' *(याकूब 4, 7-8)*

अध्याय पाँच

मध्यस्थता कैसे करें?

यहूदी गुरु रब्बी मेन्डेल कहा करते थे कि उनकी अठारह निवेदनों की मौन प्रार्थना के दौरान उनसे प्रार्थना की माँग करने वाले हर व्यक्ति उनके दिमाग में उपस्थित रहते थे। किसी ने असमंजस में पड़कर उनसे पूछा, ''इतनी छोटी प्रार्थना में यह कैसे मुमकिन है?'' गुरु ने उत्तर दिया, ''जब लोग विपत्ति में पड़कर मुझसे प्रार्थना माँगते हैं, तब मेरे हृदय में एक घाव बन जाता है। प्रार्थना के वक्त मैं अपना हृदय खोलकर उस घाव को दिखाता हूँ, ''हे विश्व के प्रभु यहाँ क्या लिखा है उसे पढ़!'' (Martin Buber, *Erzahlungen der Chassidim*)

प्रवक्ता 35, 16-18: जो सारे हृदय से प्रभु की सेवा करता है, उसकी सुनवाई होती है। पद दलितों की पुकार मेघों को चीर कर ईश्वर तक पहुँचती है। वह तब तक आग्रह करता रहता है जब तक वह लक्ष्य तक नहीं पहुँचता, और तब तक पीछे नहीं हटता जब तक सर्वोच्च ईश्वर उस पर दया दृष्टि न करे, और धर्मियों को न्याय न दिलाये।

स्तोत्र 35, 13: जब वे बीमार थे, तब मैंने पश्चात्ताप के लिए टाट ओढ़ा था, उपवास करते हुए तप किया और हृदय से प्रार्थना की थी। मैं सिर झुका कर प्रार्थना करता मानो वह मेरा आत्मीय हो, मेरा भाई हो। मैं ऐसा निरुत्साह और उदास था, जैसा कोई अपनी माता के लिए शोक मनाता हो।

लूकस 11, 5: फिर येशु ने उनसे कहा, ''मान लो कि तुम में कोई आधी रात को अपने किसी मित्र के पास जा कर कहे, दोस्त, मुझे तीन रोटियाँ उधार दो।''

रोमियों 8, 26: आत्मा भी हमारी दुर्बलता में हमारी सहायता करता है। हम यह नहीं जानते कि हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए, किन्तु अस्पष्ट आहों द्वारा आत्मा स्वयं हमारे लिए विनती करता है।

विश्वास के साथ माँगे

माकुस 11, 22–24 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, ''ईश्वर में विश्वास करो। मैं तुम लोगों से यह कहता हूँ – यदि कोई इस पहाड़ से यह कहे, 'उठ समुद्र में गिर जा; और मन में सन्देह न करे, बल्कि यह विश्वास करे कि मैं जो कह रहा हूँ, पूरा होगा, तो उसके लिए वैसा ही हो जायेगा। इसलिए मैं तुम से कहता हूँ – तुम जो कुछ प्रार्थना में माँगते हो, विश्वास करो कि वह तुम्हें मिल गया है और वह तुम्हें दिया जायेगा।

विजय को ध्यान में रखते हुए प्रार्थना करें

योहन 18, 33: मैंने तुम लोगों से यह सब इसलिए कहा है कि तुम मुझ में शान्ति प्राप्त कर सको। संसार में तुम्हे क्लेश सहना पड़ेगा। परन्तु ढारस रखो - मैंने संसार पर विजय पायी है।

फिलिप्पी 2, 9–10: इसलिए ईश्वर ने उन्हें महान बनाया और उनको वह नाम प्रदान किया, जो सब नामों में श्रेष्ठ है, जिससे येशु का नाम सुन कर आकाश, पृथ्वी तथा अधोलोक के सब निवासी घुटने टेकें।

ईश्वर के समक्ष अपने आपको विनम्र बनाकर प्रार्थना करें

इतिहास 7, 14: तब यदि मेरी अपनी प्रजा विनयपूर्वक प्रार्थना करेगी, मेरे दर्शन चाहेगी और अपना कुमार्ग छोड़ देगी, तो मैं स्वर्ग से उसकी सुनूँगा, उसके पाप क्षमा करूँगा और उसके देश का कल्याण करूँगा।

1 पेत्रुस 5, 6–7: आप शक्तिशाली ईश्वर के सामने विन्रम बने रहे, जिससे वह आप को उपयुक्त समय में ऊपर उठाये। आप अपनी सारी चिन्ताएँ उस पर छोड़ दें, क्योंकि वह अपनी सुधि लेता है।

भरोसे के साथ प्रार्थना करें

इब्रानी 4, 16: इसलिए हम भरोसे के साथ अनुग्रह के सिंहासन के पास जाये, जिससे हमें दया मिले और हम कृपा प्राप्त करें, जो हमारी आवश्यकताओं में हमारी सहायता करेगी।

1 योहन 5, 14–15: हमें ईश्वर पर यह भरोसा है कि यदि हम उसकी इच्छानुसार उस से कुछ भी माँगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। यदि हम यह जानते हैं कि हम जो भी माँगे, वह हमारी सुनता है तो हम यह भी जानते है कि हमने जो कुछ माँगा है, वह हमें मिल गया है।

बलवान को बांध दो

मारकुस 3, 27: ‘‘कोई किसी बलवान के घर में घुस कर उसका सामान तब तक नही लूट सकता जब तक कि वह उस बलवान को न बाँध ले। इसके बाद ही वह उसका घर लूट सकता है।’’

उपवास के साथ प्रार्थना करें

मत्ती 4, 2: येशु चालीस दिन और चालीस रात उपवास करते रहे।

प्रेरित-चरित 13, 2: वे किसी दिन उपवास करते हुए प्रभु की उपासना कर ही रहे थे कि पवित्र आत्मा ने कहा, मैंने बरनाबास तथा साऊल को एक विशेष कार्य के लिए निर्दिष्ट किया है। उन्हें मेरे लिए अलग कर दो।

प्रेरित चरित यह प्रकट करता हैं कि उपवास तथा प्रार्थना, प्रथम ईसाई समुदाय की वृद्धि के लिए एक अहम भूमिका निभाते थे। वह मूल्यावान समय था जब पवित्र आत्मा उनके मिशन को सम्पन्न करने के लिए उन्हें शक्ति तथा दिशा प्रदान करता था। उपवास तथा त्याग एक व्यक्ति को उसके शरीर की लालसा की ओर कमज़ोर बनाते हैं। तथा पवित्र आत्मा के कार्यों को स्वीकार करने के लिए लायक बनाते हैं। जो किसी बीमारी के कारण उपवास नहीं कर पाते उन्हें शारीरिक सुख सुविधाओं की कुछ चीज़ों को या पसन्दीदा चीज़ों त्याग देना चाहिए।

एक मत होकर प्रार्थना करनी चाहिए

मत्ती 18, 19-20: ‘‘मैं तुम से यह कहता हूँ - यदि पृथ्वी पर तुम लोगों में दो व्यक्ति एकमत होकर कुछ भी माँगेंगे, तो वह उन्हें मेरे स्वर्गिक पिता की ओर से निश्चय ही मिलेगा; क्योकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच उपस्थित रहता हूँ।

तब तक प्रार्थना करो जब तक कुछ घटित न हो

लूकस 18, 1-8: नित्य प्रार्थना करनी चाहिए और कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए-यह समझाने के लिए येशु ने उन्हें एक दृष्टान्त सुनाया।

‘‘किसी नगर में एक न्यायकर्ता था, जो न तो ईश्वर से डरता और न किसी की परवाह करता था। उसी नगर में एक विधवा थी। वह उसके पास

आ कर कहा करती थी 'मेरे मुद्दई के विरुद्ध मुझे न्याय दिलाइए'। बहुत समय तक वह न्यायकर्ता अस्वीकार करता रहा। बाद में उसने मन-ही-मन यह कहा, 'मैं न तो ईश्वर से डरता और न किसी की परवाह करता हूँ, किन्तु यह विधवा मुझे तंग करती है, इसलिए मैं उसके लिए न्याय की व्यवस्था करूँगा, जिससे वह बार-बार आ कर मेरी नाक में दम न करती रहे।' प्रभु ने कहा, ''सुनते हो वह अधर्मी न्यायकर्त्ता क्या कहता है? क्या ईश्वर अपने चुने हुए लोगों के लिए न्याय की व्यवस्था नहीं करेगा, जो दिन-रात उसकी दुहाई देते रहते हैं? क्या वह उनके विषय में देर करेगा? मैं तुम से कहता हूँ - वह शीघ्र ही उनके लिए न्याय करेगा।''

अगर आप दृढ़ता के साथ मध्यस्थता शुरू करेंगे तो आप अपने जीवन में, परिवार में, पल्ली में, कलीसिया में, देश में और संसार में बड़े बड़े कार्य होते देखेंगे। यह इसलिए कि ईश्वर की योजना आपके जीवन में कार्य करने लगती है। शैतान के बंधन जो आपके जीवन को फलहीन बनाता है, टूट जाते हैं।

मध्यस्थता की बुलाहट को महसूस करनेवालों के लिए सुझाव

1. आत्मा की प्यास के लिए कृपा एवं मध्यस्थता के वरदान के लिए पवित्र आत्मा से प्रार्थना करें।

2. मध्यस्थता के लिए समय निकालें। कोई भी मध्यस्थ नहीं बन सकता जब तक वह मध्यस्थता के लिए समय निकालना न सीखें। संसार में बहुत सारी लुभाने वाली बाहरी तत्व हैं। जब तक कोई सभी बातों के लिए 'ना' कहना न सीख जाए तब तक वह मध्यस्थता के लिए ईश्वर के साथ अपना समय नहीं दे पायेगा।

3. मध्यस्थता सीखने का एक ही रास्ता है : वो है मध्यस्थता में लग जाना। कम से कम 15 मिनट के लिए मध्यस्थ प्रार्थना करने का निश्चय करें। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे आप ज़रूरत को महसूस करें आप मध्यस्थता का समय बढ़ाते जाएँ।

4. कोई आप से प्रार्थना की माँग करे तो आप उसे गम्भीरता से लें। आप उन्हें ध्यानपूर्वक सुनें। अगर बात गम्भीर हो तो उसे लिख लें और उस मतलब के लिए हर रोज प्रार्थना करें। इसके लिए आप एक डायरी हमेशा अपनी जेब में रखें। अगर बात ज्यादा गम्भीर न हो तब वहीं खड़े-खड़े प्रार्थना कर लें।

5. अगर कोई व्यक्ति आपके पास सांसारिक जरूरतों की प्रार्थना के लिए आए तब आप उनके अकथित आध्यात्मिक जरूरतें जैसे ख्रीस्त में विश्वास द्वारा मुक्ति, पवित्र आत्मा का अभिषेक आदि के लिए प्रार्थना करें।

6. जब भी आप पवित्र मिस्सा बलिदान में भाग लें तो आप उन लोगों को वेदी पर समर्पित करना न भूलें जिनके लिए आप प्रार्थना कर रहें हैं। पवित्र परमप्रसाद समारोह, कृपादान का सबसे महत्वपूर्ण क्षण है।

प्रार्थना किस लिए? और किसके लिए?

पवित्र धर्मग्रन्थ के निम्नलिखित पद और कलीसिया द्वारा प्रकाशित लेख हमें यह प्रेरणा देती है कि ईश्वर की योजना के अन्तर्गत मुक्ति के लिए आवश्यक हर परिस्थिति के लिए हम प्रार्थना करें।

प्रथम मसीही समुदाय इस प्रकार के भावपूर्ण भाईचारे का जीवन जीते थे। इसलिए प्रेरित पौलुस मसीही समुदाय को न केवल अपने सुसमाचार के प्रचार कार्य में भाग लेने देते हैं परन्तु उनके लिए मध्यस्थता भी करते हैं। मसीहियों की मध्यस्थता की कोई सीमा नहीं होती है:- सभी मनुष्यों के लिए, राजाओं और अधिकारियों के लिए,'' जो अत्यचार करते हैं और जो सुसमाचार को ठुकराते हैं उनकी मुक्ति के लिए भी।

येशु ने, प्रेरितों को चुनने से पहले, पिता के नाम की महिमा के लिए, ईशराज्य आने के लिए, शिष्यों के बीच एकता के लिए, हर बुराई से शिष्यों को बचाने के लिए, प्रार्थना करते थे। (Catechism of the Catholic Church 2636)।

मिशनरियों के सफर में प्रार्थना साथ होनी चाहिए ताकि ईश्वर की कृपा द्वारा वचन की घोषणा प्रभावशाली हो। अपने पत्रों में सन्त पौलुस विश्वासियों से उनके लिए प्रार्थना की माँग करते हैं ताकि वे सुसमाचार की घोषणा दृढ़ता एवं भरोसे के साथ कर सकें। प्रार्थना के साथ आत्मत्याग की आवश्यकता है। (Redemptoris Mission,78)

मत्ती 6, 9 ''तो इस प्रकार प्रार्थना किया करो - स्वर्ग में विराजमान हमारे पिता। तेरा नाम पवित्र माना जाये। तेरा राज्य आये। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में, वैसे पृथ्वी पर भी पूरी हो।''

योहन 17, 11: परमपावन पिता! तूने जिन्हें मुझे सौंपा है, उन्हें अपने नाम के सामर्थ्य से सुरक्षित रख, जिससे वे हमारी ही तरह एक बने रहें।

योहन 17, 15: *मैं यह नहीं माँगता कि तू उन्हें संसार से उठा ले, बल्कि यह कि तू उन्हें बुराई से बचा।*

1 तिमथी 2, 1-2: *मैं सबसे पहले यह अनुरोध करता हूँ कि सभी मनुष्यों के लिए, विशेष रूप से राजाओं और अधिकारियों के लिए अनुभव-विनय, प्रार्थना, निवेदन तथा धन्यवाद अर्पित किया जाये, जिससे हम भक्ति तथा मर्यादा के साथ निर्विघ्न तथा शान्त जीवन बिता सकें।*

यिरमियाह 29, 7: *उस नगर की भलाई के लिए कार्य करो, जहाँ मैंने तुम्हें निर्वासित किया है और उसके लिए प्रभु से प्रार्थना करो; क्योंकि उसकी भलाई में ही तुम्हारी भलाई है।*

2 थेसलोनिकी 3, 1: *भाईयो! आप हमारे लिए प्रार्थना करें, जिससे प्रभु का वचन आप लोगों के यहाँ की तरह शीघ्र ही फैल जाये तथा समादृत हो, और यह भी कि टेढ़े तथा दुष्ट लोग हमारे कार्य में बाधा न डालें।*

एफीसी 6, 18-20: *आप लोग हर समय आत्मा में सब प्रकार की प्रार्थना तथा निवेदन करते रहें। आप लोग जागते रहें और सब सन्तों के लिए निरन्तर विनती करते रहें। आप मेरे लिए भी विनती करें, जिससे बोलते समय मुझे शब्द दिये जायें और मैं निर्भीकता से उस सुसमाचार का रहस्य घोषित कर सकूँ, जिस सुसमाचार का मैं बेड़ियों से बंधा हुआ राजदूत हूँ। आप विनती करें, जिससे मैं निर्भीकता से सुसमाचार का प्रचार कर सकूँ, जैसा कि मेरा कर्तव्य है।*

शोकगीत 2, 18-19: *तुम सारे हृदय से प्रभु, सियोन के रक्षक की दुहाई दो। तुम्हारे आँसू दिन-रात नदी की तरह बहते रहें। तुम नहीं रुको, निरन्तर रोते रहो। उठो, रात में चिल्लाओ। पहले पहर में अपना हृदय पानी की तरह बहा दो। अपने बच्चों के प्राण बचाने के लिए प्रभु के सामने हाथ उठा कर प्रार्थना करो। वे गलियों के नुक्कड़ों पर भूख के कारण बेहोश पड़े हैं।*

लूकस 10, 2: *उन्होंने उन से कहा, ''फसल तो बहुत है, परन्तु मज़दूर थोड़े हैं; इसलिए फसल के स्वामी से विनती करो कि वह अपनी फसल काटने के लिए मज़दूरों को भेजे।''*

अध्याय छः

हमारे मध्यस्थ और स्वर्गिक सहायक

केवल एक ही मध्यस्थ है, अर्थात् येशु मसीह

सभी मनुष्यों विशेषकर पापियों की ओर से पिता का एक ही मध्यस्थ है, वो है येशु ख्रीस्त। जो लोग उनके द्वारा ईश्वर की शरण लेते हैं, वह उन्हें परिपूर्ण मुक्ति दिलाने में समर्थ हैं; क्योंकि वे उनकी ओर से निवेदन करने के लिए सदा जीवित हैं। *(Catechism of the Catholic Church)*

जब कोई लड़ाई होती है तो लोग निर्णायक बनने के लिए तीसरे पक्ष को ढूँढ़ते हैं जिसका दोनों पक्षों से कोई मतलब न हो। सबसे अच्छा मध्यस्थ वही होगा जिसे दोनों पक्षों से बराबर का रिश्ता हो। वह दोनों का हो और उनके दिल में दोनों की भलाई के लिए निष्कपट फिक्र हो। और ये सारे गुण सिर्फ एक में हैं: वे है येशु मसीह, जो सच्चा ईश्वर भी है और सच्चा मनुष्य भी वही एकमात्र है जो ईश्वर के हृदय को जानता हो और जो मनुष्य के संघर्षों को समझता हो। येशु अधिवक्ता है, मध्यस्थ और रक्षक है जो हमारी ओर से पिता से निवेदन करता है। वर्तमान में, अपनी महिमा में यही उनका सबसे महत्वपूर्ण मिशन है। इसलिए पवित्र धर्मग्रन्थ बताता है:-

1 तिमथी 2, 5-6: *क्योंकि केवल एक ही ईश्वर है और ईश्वर तथा मनुष्यों के केवल एक ही मध्यस्थ हैं, अर्थात् येशु मसीह, जो स्वयं मनुष्य हैं और जिन्होंने सबों के उद्धार के लिए अपने को अर्पित किया। उन्होंने उपयुक्त समय पर इसके सम्बन्ध में अपना साक्ष्य दिया।*

1 योहन 2, 1-2: *बच्चो! मैं तुम लोगों को यह इसलिए लिख रहा हूँ कि तुम पाप न करो। किन्तु यदि कोई पाप करता, तो पिता के पास हमारे एक सहायक विद्यमान हैं, अर्थात् धर्मात्मा येशु मसीह। उन्होंने हमारे पापों के लिए प्रायश्चित किया है और न केवल हमारे पापों के लिए, बल्कि समस्त संसार के पापों के लिए भी।*

इब्रानी 5, 7: *मसीह ने इस पृथ्वी पर रहते समय पुकार-पुकार कर और आँसू बहा कर ईश्वर से, जो उन्हें मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थना और अनुनय-विनय की।*

इब्रानी 7, 25: यही कारण है कि जो लोग उनके द्वारा ईश्वर की शरण लेते हैं, वे उन्हें परिपूर्ण मुक्ति दिलाने में समर्थ हैं; क्योंकि वे उनकी ओर से निवेदन करने के लिए सदा जीवित रहते हैं।

रोमी 8, 34: *उन्हें कौन दोषी ठहरायेगा? क्या येशु मसीह ऐसा करेंगे? वह तो मर गये, बल्कि जी उठे और ईश्वर के दाहिने विराजमान हो कर हमारे लिए प्रार्थना करता रहता है।*

चूँकि हमारे लिए येशु, ईश्वर की 'हाँ' है, वह हमारा मुक्तिदाता, हमारा भाई, हमारा मित्र और ईश्वर के दाहिने विराजमान हमारा सहायक है। ''इसलिए, दया पाने के लिए और सही समय पर मदद की कृपा ढूँढ़ने के लिए हम कृपा के सिंहासन के पास दृढ़ता से पहुँचे।'' (रोमी 4,16)

मसीह ही एकमात्र मध्यस्थ है और कोई दूसरा मध्यस्थ नहीं है

चूँकि मसीह ही एकमात्र मध्यस्थ है, क्या दूसरा मध्यस्थ हो सकता है? मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मसीह ही एकमात्र मध्यस्थ हैं और कोई नहीं। कोई भी मसीह की जगह नहीं ले सकता है। तब माँ मरियम और संतों की क्या भूमिका है? हम उनसे क्यों प्रार्थना करते हैं?

उत्तर पाने के लिए हमें मसीह के रहस्य को समझने की कोशिश करनी चाहिए। ''वही शरीर अर्थात् कलीसिया के शीर्ष है।'' (कलोसी 1, 18) ''मनुष्य का शरीर एक है यद्यपि उसके बहुत-से अंग होते हैं। और सभी अंग, अनेक होते हुए भी एक ही शरीर बन जाते हैं। मसीह के विषय में भी यही बात है।'' (1 कुरिन्थि 12,12)। पवित्र कुँवारी मरियम, संत गण और हम सभी मसीह में हैं और मसीह के आध्यात्मिक शरीर के सदस्य हैं। अगर कोई यह कहता है कि हमें पवित्र कुँवारी मरियम और संतों की सहायता नहीं माँगनी चाहिए तो उसे कलीसिया के रहस्यों को समझा ही नहीं है। पवित्र मरियम और संतों से सहायता की माँग, ''धर्मात्मा की भक्तिमय प्रार्थना बहुत प्रभावशाली होती है।'' (याकूब 5:16)। निष्कलंक कुँवारी मरियम और संतों से ज्यादा धार्मिक और कौन हो सकता है? जब

कि प्रभु येशु ने कहा कि उनका समय अभी नहीं आया है, फिर भी माँ के अनुरोध पर उन्होंने काना के विवाह समारोह के दौरान चमत्कार किया। माँ मरियम की प्रार्थना शक्तिशाली है। येशु के प्रिय शिष्य योहन के साथ, माँ मरियम को अपनी माता के रूप में, अपने जीवन में और अपने घर में स्वीकार कीजिए। मध्यस्थता के कार्य में बढ़ने के लिए वह आपकी सहायता करेगा।

पवित्र आत्मा हमारे शिक्षक और सहायक हैं

येशु मसीह हमारे सहायक हैं, पर वह अकेले मध्यस्थता नहीं करना चाहता है। वह चाहता है कि हम सब प्रार्थना में उसका साथ दें। इसलिए उसने पिता की ओर से हमें एक दूसरे सहायक प्रदान किया है; वह है पवित्र आत्मा जो हमारी अस्पष्ट आहों द्वारा स्वयं हमारे लिए विनती करता है''। (रोमी 8, 26) इसलिए प्रभु येशु अपना पवित्र आत्मा भेजते हैं ताकि वह हमें ईश्वर के सम्मुख मध्यस्थ के रूप में उनकी प्रेरिताई में जोड़ सकें। पवित्र आत्मा हममें निवास करती है। और हममें पूर्ण रूप से निवास करेगी जब हम हर दिन उसकी छत्रछाया की उपस्थिति में अपने आप को समर्पित करेंगे। मध्यस्थता ऐसी प्रार्थना है जिसे पवित्र आत्मा के निर्देशन और ऊर्जावान अगुवाई पर दूसरों के लिए जाती है। पवित्र आत्मा मध्यस्थों को उनकी प्रेरिताई के लिए वरदानों और करिश्माओं से भर देता है : विशेषकर विश्वास का दान, ज्ञान के शब्द, प्रज्ञा के शब्द और आत्माओं की परख करने का वारदान।

योहन 14, 16: *मैं पिता से प्रार्थना करूँगा और वह तुम्हें एक दूसरा सहायक प्रदान करेगा, जो सदा तुम्हारे साथ रहेगा।*

योहन 14, 26: *परन्तु वह सहायक, वह पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम पर भेजेगा, तुम्हें सब कुछ समझा देगा। मैंने तुम्हें जो कुछ बताया, वह उसका स्मरण दिलायेगा।*

योहन 16, 13: *जब वह सत्य का आत्मा आयेगा, तो वह तुम्हें पूर्ण सत्य तक ले जायेगा; क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं कहेगा, बल्कि वह जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा और तुम्हें आने वाली बातों के विषय में बतायेगा।*

रोमी 8, 26-27: *आत्मा भी हमारी दुर्बलता में हमारी सहातया करता है। हम यह नहीं जानते कि हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए, किन्तु हमारी अस्पष्ट आहों द्वारा आत्मा स्वयं हमारे लिए विनती करता है।*

1 पेत्रुस 4, 10-11: जिसे जो वरदान मिला है, वह ईश्वर के बहुविध अनुग्रह के सुयोग्य भण्डारी की तरह दूसरों की सेवा में उसका उपयोग करें।

1 कुरिन्थी 12, 1: *भाइयो, हम चाहते हैं कि आप लोगों को आध्यात्मिक वरदानों के विषय में निश्चित जानकारी हो।*

1 कुरिन्थी 14, 12: आपके विषय में भी यही बात है। आप लोग आध्यात्मिक वरदानों की अभिलाषा करते हैं, इसलिए ऐसे वरदानों से सम्पन्न होने का प्रयत्न करें, जो कलीसिया के आध्यात्मिक निर्माण में सहायक हो।

याकूब 1, 5: *यदि आप लोगों में किसी में प्रज्ञा का अभाव हो, तो वह ईश्वर से प्रार्थना करे और उसे प्रज्ञा मिलेगी; क्योंकि ईश्वर खुले हाथ और खुशी से सबों को देता है।*

अध्याय सात

मसीह में हमारा मिशन एवं सौभाग्य

आप एक 'चुने हुए वंश, राजकीय याजक वर्ग हैं'

याजक वह है जो ईश्वर के समीप आता है, जो ईश्वर के समक्ष मनुष्यों का प्रतिनिधि है, और जो येशु मसीह द्वारा ईश्वर को आध्यात्मिक भेंट चढ़ाता है। मध्यस्थता, बपतिस्मा की गरिमा को जीने के विभिन्न माध्यमों से एक है। जबकि याजक, नबी और राजा के रूप में मसीह के त्रिस्तरीय दायित्व में विश्वासी भाग लेता है। यदि आप जानते हैं कि किसी व्यक्ति को पश्चात्ताप की कृपा की आवश्यकता है तो उसकी तरफ से ईश्वर के समीप आते हुए आप मसीह की राजकीय याजकता में भाग लेने के लिए अपनी बुलाहट को पूरा कीजिए। तब तक प्रार्थना कीजिए जब तक उस व्यक्ति को कृपा मिल जाए। ईश वचन के ये पद, हमें ख्रीस्तीय बुलाहट में बढ़ने की चुनौती देते हैं :-

प्रकाशना 1, 5-6: *और येशु मसीह की ओर से आप लोगों को अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो। मसीह विश्वसनीय साक्षी, मृतकों में से जी उठनेवाले में पहलौठा और पृथ्वी के राजाओं का अधिराज है। वह हम को प्यार करता है। उसने अपने रक्त से हमें पापों से मुक्त किया और अपने ईश्वर और पिता के लिए हमें याजकों का राजवंश बनाया। उसकी महिमा और उसका सामर्थ्य अनन्त काल तक बना रहे! आमेन!*

इब्रानी 5, 1-3: *प्रत्येक प्रधानयाजक मनुष्यों में से चुना जाता है और ईश्वर-सम्बन्धी बातों में मनुष्यों का प्रतिनिधि नियुक्त किया जाता है, जिससे वह भेंट और पापों के प्रायश्चित की बलि चढ़ाये। वह अज्ञानियों और भूले-भटके लोगों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार कर सकता है, क्योंकि वह स्वयं दुर्बलताओं से घिरा हुआ है। यही कारण है कि उसे न केवल जनता के लिए, बल्कि अपने लिए भी पापों के प्रायश्चित की बलि चढ़ानी पड़ती है।*

इब्रानी 10, 19-23: *भाइयो! येशु का रक्त हमें निर्भय हो कर परमपावन मन्दिर-गर्भ में प्रवेश करने का आश्वासन देता है। उन्होंने हमारे लिए एक नवीन तथा जीवन्त मार्ग खोल दिया, जो उनके शरीर-रूपी परदे से होकर जाता है। अब हमें एक महान पुरोहित प्राप्त हैं, जो ईश्वर के घराने पर नियुक्त किये गये हैं। इसलिए हम अपने हृदय को पाप के दोष से मुक्त कर और अपने शरीर को स्वच्छ जल से धो कर निष्कपट हृदय से तथा परिपूर्ण विश्वास के साथ ईश्वर के पास चलें। हम अपने भरोसे का साक्ष्य देने में अटल एवं दृढ़ बने रहें, क्योंकि जिसने हमें वचन दिया है, वह सत्यप्रतिज्ञ है।*

याकूब 4, 8-12: *ईश्वर के पास जायें और वह आपके पास आयेगा। पापी! अपने हाथ शुद्ध करें। कपटी! अपना हृदय पवित्र करें। अपनी दुर्गति पहचान कर शोक मनायें और आँसू बहायें। आपकी हँसी शोक में और आपका आनन्द विषाद में बदल जाये। प्रभु के सामने दीन-हीन बनें और वह आपको ऊँचा उठायेगा। भाइयो! आप एक दूसरे की निन्दा नहीं करें। जो अपने भाई की निन्दा करता या अपने भाई का न्याय करता है, वह संहिता की निन्दा और न्याय करता है। यदि आप संहिता का न्याय करते हैं, तो आप संहिता के पालक नहीं, बल्कि न्यायकर्त्ता बन बैठते हैं। केवल एक ही विधायक और एक ही न्यायकर्त्ता है, जो बचाने और नष्ट करने में समर्थ है। अपने पड़ोसी का न्याय करने वाले आप कौन हैं?*

1 *पेत्रुस 2, 4-5:* *प्रभु वह जीवन्त पत्थर हैं, जिसे मनुष्यों ने तो बेकार समझकर निकाल दिया, किन्तु जो ईश्वर द्वारा चुना हुआ और उसकी दृष्टि में मूल्यवान है। उनके पास आयें और जीवन्त पत्थरों का आध्यात्मिक भवन बनें। इस प्रकार आप पवित्र याजक-वर्ग बनकर ऐसे आध्यात्मिक बलिदान चढ़ा सकेंगे, जो येशु मसीह द्वारा ईश्वर को ग्राह्य होंगे।*

उत्पत्ति 18, 23: *इब्राहीम ने उसके निकट आकर कहा, ''क्या तू सचमुच पापियों के साथ-साथ धर्मियों को भी नष्ट करेगा?''*

1 पेत्रुस 2, 9 : *परन्तु आप लोग चुने हुए वंश, राजकीय याजक-वर्ग, पवित्र राष्ट्र तथा ईश्वर की निजी प्रजा हैं, जिससे आप उसके महान् कार्यों का बखान करें, जो आप लोगों को अन्धकार से निकालकर अपनी अलौकिक ज्योति में बुला लाया।*

मध्यस्थ अर्थात् घुटनों पर रहनेवाला मिशनरी

लिस्यू की सन्त तरेसा घुटनों पर खड़ी होकर मध्यस्थता करती थी। वह दूर देश जाकर प्रेरिताई का कार्य नहीं कर पाती थी। फिर भी लोगों की मुक्ति के लिए उसकी फिक्र, दृढ़ प्रार्थना तथा लोगों के परिवर्तन के लिए उनके त्यागों के कारण कलीसिया ने उन्हें मिशन की संरक्षिका घोषित किया।

''दु:खभोग के मुक्तिप्रद मूल्य जो प्रेम से स्वीकार करके ईश्वर को समर्पित किया जाता है तो वह मसीह के बलिदान द्वारा प्राप्त होता है। उनके अपने शरीर की पूर्णता तक पहुँचने के लिए, मसीह, अपने आध्यात्मिक शरीर के उन सदस्यों को उनके दु:खभोग में सहभागी होने के लिए बुलाता है। *(किलोस्सी 1, 24)*। मिशनरियों के बलिदानों के साथ सभी विश्वासियों के बलिदानों को जोड़ना चाहिए। जो रोगियों की देख रेख का सेवाकार्य कर रहे हैं, उनसे अनुरोध है कि वे रोगियों को उनकी पीड़ा की शक्तिशाली क्षमता के बारे में सिखायें और अपनी पीड़ाओं को मिशनरियों की भलाई हेतु ईश्वर को समर्पित करने के लिए प्रोत्साहित करें। ऐसी भेंट चढ़ाने से रोगी लोग स्वयं मिशनरी बन जाते हैं। *(Redemptoris Missio 78)*

मध्यस्थ, ईश्वर का मित्र है

पवित्र त्रित्व के साथ गहरी घनिष्ठता तथा मित्रता की ओर ले चलने वाला मनन चिन्तन, एक प्रभावशाली मध्यस्थता का ज़रूरी शर्त है। ईश्वर अपनी योजना को अपने चुने हुए लोगों यानी अपने मित्रों पर प्रकट करता है। जितना अधिक कोई व्यक्ति ईश्वर की मित्रता और घनिष्ठता में बढ़ता है उतना ही उसके सेवाकार्य प्रभावशाली होते हैं। ईश्वर जिन बातों के लिए प्रार्थना करवाना चाहता है, उन बातों को वह उन पर प्रकट करेगा।

योहन 15, 14: *यदि तुम लोग मेरी आज्ञाओं का पालन करते हो, तो तुम मेरे मित्र हो।*

आमोस 3, 7: *क्योंकि प्रभु-ईश्वर नबियों और अपने सेवकों को सूचना दिये बिना कुछ नहीं करता।*

उत्पत्ति 18, 17: *प्रभु ने अपने मन में यह कहा, ''मैं जो करने जा रहा हूँ, क्या इसे इब्राहीम से छिपाये रखूँ।''*

वर्षा के बादलों का रूपक

भूतल का जल जब सूर्य की किरणों द्वारा गर्म हो जाता है तब वह भाप बनकर ऊपर जाता है और पानी से भरे बादल के रूप में आकाश में एकत्रित हो जाता है। हवा इसे कुछ दूर तक ले जाता है और तब वह बादल वर्षा के रूप में बरसता है। इस प्रकार हमारा हृदय जब जल के समान ईश्वरीय प्रेम की किरणों के लिए खुला रहता है, तब हमारे हृदय की प्रार्थनाएँ रूपी भाप ऊपर उठकर स्वर्ग में जाती है और कृपाओं के बादल का रूप धारण कर एकत्रित हो जाती है। हवा की तरह पवित्र आत्मा उसे ले जाकर, विशेष व्यक्तियों और परिस्थितियों पर खास समय पर बरसाता है। जब आप किसी व्यक्ति या किसी परिस्थिति के लिए प्रार्थना करते हैं तो आपको हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। आपकी प्रार्थना व्यर्थ नहीं होती है। वह स्वर्ग में जमा होती है। जब वह भर जाती है तो पवित्र आत्मा उन व्यक्तियों और परिस्थितियों पर बरसती है, जिनके लिए आप प्रार्थना कर रहे थे।

सबसे सुन्दर उदाहरण है अपने बेटे के लिए सन्त मोनिका की प्रार्थना। अपने बेटे अगस्तिन के लिए सन्त मोनिका की दृढ़ प्रार्थना के बारे में ''सन्तों की जीवनी'' में बताया गया है। ''मोनिका ने देखा कि अगस्तिन उनसे और मसीही विश्वास से दूर भटकता जा रहा है। प्रार्थना ही मोनिका का मुख्य साधन था जिसे वह लगातार इस्तेमाल करती रही। कई सालों तक उनकी प्रार्थना व्यर्थ मालूम होती थी। एक शिक्षक के रूप में अगस्तिन की ख्याति बढ़ती गई। लेकिन वह अपने व्यक्तिगत जीवन में सुधार नहीं लाना चाहता था। जब वह तीस साल का था तब अपनी माँ से झूठ बोलकर रोम चला गया। उसने सोचा कि सच बोलने से माँ उसका पीछा करेगी। यही मोनिका के जीवन का सबसे कठिन दौर था। अपने बेटे को वह संसार में सबसे ज्यादा प्यार करती थी, लेकिन बेटे को माँ की जरूरत नहीं थी। मोनिका ने हिम्मत नहीं हारी। पहले कभी मदद माँगने के लिए एक बूढ़े बिशप के पास वह रोती हुई गई थी। मोनिका के जीवन के बारे में सब कुछ जाननेवाले बिशप ने उससे यह कहते हुए भेजा था, ''इन आँसुओं के पुत्र का कभी विनाश नहीं होगा।'' सन्त मोनिका ने अपने बेटे का पीछा किया। पहले वह रोम गई, फिर मिलान शहर गई जहाँ अगस्तिन भाषण कला पढ़ाने गया हुआ था। अन्त में वहीं मिलान में मोनिका ने अपनी आशा का फल पाया। मिलान में अगस्तिन का मन परिवर्तन हुआ।

आप ईश्वर का चुना हुआ साधन हैं।

क्या आपका कोई भाई, बहन, पति, पत्नी, पिता, माता, पड़ोसी या मित्र ऐसा है, जो विश्वास में नहीं हो, या पापमय जीवन बिता रहे हो या अपराधी हो? ईश्वर चाहता है कि इस व्यक्ति के परिवर्तन का और उसके विश्वास को बढ़ाने का साधन आप ही बनें और कृपाओं का माध्यम बनें। इस व्यक्ति के जीवन को परिवर्तित करना आप अपने जीवन का लक्ष्य बना लें। यह समझने के लिए आप सन्त तरेसा की बातों पर ध्यान दें कि वह किस प्रकार प्रान्ज़ीनी के परिवर्तन के लिए कार्य करती थी। ''मैं हर हाल में उसे नरक में जाने से बचाना चाहती थी। और इस उद्देश्य को पाने के लिए मैंने हर तरह के साधन को अपनाया। यह सोचकर कि मैं अकेले कुछ नहीं कर पाऊँगी, मैंने प्रभु येशु की असीम योग्यता को और कलीसिया के आध्यात्मिक खजाने को प्रभु को चढ़ा दिया। अन्त में मैंने सेलीन से आग्रह किया कि वह मेरे निवेदनों के लिए मिस्सा बलिदान चढ़ाये।''

तेरेसा की तरह आप भी उस व्यक्ति को पश्चात्ताप की ओर लाने के लिए दृढ़ निश्चय कर लें। परन्तु यह जान लें कि आप स्वयं कुछ नहीं कर सकते। हर तरह के साधन को अपनाएँ। प्रभु येशु की असीम योग्यता को और कलीसिया की आध्यात्मिक खजाने को ईश्वर को चढ़ाएँ। अपने मतलबों के लिए मिस्सा बलिदान चढ़ाए। अपने निकट के किसी प्रिय व्यक्ति से आग्रह करें कि आपके साथ मिलकर उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें। अपने इस मतलब की पूर्ति के लिए अपनी सारी खुशियाँ, पीड़ा और स्वेच्छा से अपनाये बलिदानों को भी प्रभु के असीम बलिदान के साथ जोड़कर, उन्हीं को चढ़ाएँ। 'हर कीमत' पर उस व्यक्ति को बचाने का मतलब है कि आप हर पीड़ा और मृत्यु को भी सहने के लिए तैयार हैं। प्रेम में प्रतिबद्ध रहें और निरंतर प्रार्थना में दृढ़ रहें। उस व्यक्ति पर ईश्वर की दया की भीख माँगे। एक दिन कृपा का बादल उस व्यक्ति पर बरस पड़ेगा। उस व्यक्ति के परिवर्तन को देखने के लिए मोनिका के समान आप यदि पृथ्वी पर जीवित हो तो सही, नहीं तो निश्चित रूप से स्वर्ग में, आप कृपा प्राप्त करेंगे। आप इसके सहभागी होंगे जिस प्रकार ''ईश्वर के दूत एक पश्चात्तापी पापी के लिए आनन्द मनाते हैं।'' (लूकस 15, 10)।

अध्याय आठ

पवित्र संस्कार में येशु हमारे सान्त्वनादाता हैं

पवित्र परम प्रसाद, नया और अनन्त विधान है। इसलिए वेदी पर पवित्र संस्कार, प्रभु की प्रतिज्ञा की पूर्ति को दर्शाता है। ''मैं संसार के अन्त तक सदा तुम्हारे साथ हूँ।'' (मत्ती 28, 20) उसकी अनन्त उपस्थिति के बदले हमारी तरफ से उपयुक्त प्रत्युत्तर है उसकी निरंतर आराधना। एक अकेला व्यक्ति ऐसा प्रत्युत्तर नहीं दे सकता क्योंकि इस पृथ्वी पर मनुष्य का जीवन नश्वर है। यह सिर्फ कलीसिया या कलीसियाई समुदाय द्वारा ही सम्भव है। परम पवित्र संस्कार में हमारे प्रेममय प्रत्युत्तर की प्यास में प्रभु येशु प्रतीक्षारत हैं। वे हमसे पूछते हैं, ''क्या तुम घण्टे भर भी मेरे साथ नहीं जाग सके?'' (मारकुस 14, 37)। अगर लोगों का एक इच्छुक समुदाय पवित्र संस्कार के समक्ष कम से कम एक घण्टा बिताने के लिए तैयार है तो निरन्तर आराधना के लिए पवित्र संस्कार का भव्य प्रदर्शन संभव हो जाता है। प्रत्येक घण्टे पर, प्रभु की उपस्थिति में एक या दो व्यक्ति को आराधना तथा प्रार्थना करनी चाहिये। इस तरह प्रभु का घर हर वक्त खुला रहता है ताकि कोई भी आकर प्रभु का दर्शन कर सके। एक दिन शाम के वक्त एक विशेष प्रार्थना सभा के बाद जब मैं एक गिरजाघर से बाहर निकल रहा था, तब बौद्ध धर्म का एक युवक मुझसे बोला, ''आज की शाम गिरजाघर को खुला देख मैं खुश हूँ। मुझे हर रोज, कुछ समय के लिए गिरजाघर में बैठना अच्छा लगता है। पर अक्सर मैं गिरजाघर को बन्द पाता हूँ।'' प्रभु का घर हर वक्त खुला होना चाहिए ताकि जरूरत में कोई भी आकर प्रार्थना कर सके।'' लिखा है–'मेरा घर प्रार्थना का घर होगा।' (लूकस 19, 46)।

तुम सब जो थके-माँदे हो मेरे पास आओ

परमप्रसाद में उपस्थित प्रभु, थके–माँदे और बोझ से दबे लोगों का इन्तज़ार करता है ताकि वे उन्हें विश्राम और चंगाई दे सके। एक दिन दिल्ली के बुराड़ी गाँव में खेत में काम करनेवाला एक आदमी हमारे सान्त्वना प्रार्थना घर की ओर भागता हुआ आया और प्रार्थनालय में प्रवेश

करके प्रभु के सामने जमीन पर लेट गया। करीब आधे घण्टे बाद वह उठकर वापस चला गया। अगले दिन वह फूलों और उपहारों के साथ प्रभु को धन्यवाद देने आया क्योंकि उसने चंगाई प्राप्त की थी। येशु हमारी दुःख तकलीफ में हमें सान्त्वना देना चाहता है, हमारी कमजोरियों में हमें मज़बूत बनाना चाहता है, हमारी निराशाओं में हमें प्रोत्साहन देना चाहता है और हमारी बीमारियों से हमें चंगा करना चाहता है। ''वह सारी दुःख-तकलीफ में हमको सान्त्वना देता रहता है, जिससे ईश्वर की ओर से हमें जो सान्त्वना मिलती है, उसके द्वारा हम दूसरों को भी उनकी हर प्रकार की तकलीफ में सान्त्वना देने के लिए समर्थ हो जायें।'' *(2 कुरिन्थी 1, 4)*

प्रभु की उपस्थिति में रहने का अपना अनुभव मैं आपको बताना चाहता हूँ। मैं हीनभावना से ग्रसित व्यक्ति था। समय समय पर मैं उदासी के चंगुल में फंस जाता था जो कुछ दिनों तक मुझे सताती थी। अधिकारियों का सामना करने में मुझे डर लगता और मैं बेहद परेशान हो जाता था। यदि मेरे गुस्से को उकसाया जाता (सौभाग्य से यह विरले ही होता था।) तो मैं खतरनाक रूप से क्रोध में अन्धा हो जाता था। कामुक इच्छाएँ मेरे हृदय पर राज करती थीं जिसके कारण मैं बहुत ज़्यादा परेशान हो जाता और स्त्रियों का सामना करने में बहुत अधिक शर्माता था। मुझे पता था कि ये बोझ मेरी पुरोहिताई के कार्यों में मुझे कमज़ोर कर देंगे। मुझे पता नही था कि मैं इन समस्याओं से कैसे बच निकलूँ। इसका एक ही उपाय मुझे सूझा कि मैं अपनी चित्रकारी की कला में व्यस्त रहकर दुनिया से छिप जाऊँ। मैंने सोचा कि जब मैं पुरोहित बन जाऊँगा तब मैं कहीं दूर जाकर लोगों से भी दूर रहकर अपने जीवन को धार्मिक चित्रकारी के लिए समर्पित कर दूँगा।

पुरोहित बनने के दौरान, ईश्वर की कृपा से मेरे अन्दर एक चाहत आई कि मैं हर रोज कम से कम आधा या एक घण्टा अकेले प्रार्थनालय में परम पवित्र संस्कार के सामने बिताऊँ। कुछ दिन मैं बड़े अच्छे से प्रार्थना करता रहा पर कुछ दिनों मुझे काफी उबाऊ सा महसूस होता था। हर रोज परम प्रसाद के सामने समय बिताते हुए मुझे लगता था कि यह समय व्यर्थ जा रहा है। कभी कभी मैं सो जाता या अन्य विचारों में खोकर समय बिताने लगता था। तब भी मैंने हार नहीं मानी। मेरे पुरोहिताई अभिषेक के कुछ वर्षों के बाद मैं जान गया कि लोगों का सामना करने में अब मैं न तो डरता हूँ और न ही मुझमें घबराहट होती है। समय-समय की उदासी या अवसाद की

बीमारी मेरे अन्दर से पूर्ण रूप से गायब हो गई थी। लोगों से सम्पर्क करने में मेरे अन्दर एक नई स्फूर्ति और स्वतंत्रता का अनुभव हुआ। ये सारी चंगाइयाँ परम पवित्र संस्कार में उपस्थित येशु की चंगाई की किरणें थीं जो उनकी उपस्थिति में बिताये मौन क्षणों का परिणाम था।

उनकी चंगाई की किरणों ने मेरी आशंकाओं और भय को मिटा दिया और उनकी कृपा ने मुझे वचन का प्रचारक बना दिया। न केवल भारत में, बल्कि दुनिया के दूसरे देशों में भी, बड़ी से बड़ी भीड़ को सम्बोधित करने का सामर्थ्य उन्होंने मुझे दिया। मैं, जो लोगों से दूर भागता था, प्रभु ने मुझे लोकधर्मी मिशनरियों के समुदाय 'सान्त्वना' का गठन करने का साधन बना दिया तथा मुझे इस समुदाय के सदस्यों के साथ खुशी से जीने के लिए प्यार और साहस दिया। मैं प्रभु को सान्त्वना समुदाय के शिष्यों के लिए धन्यवाद देता हूँ। "वह सारी दुःख तकलीफ में हम को सान्त्वना देता रहता है, जिससे ईश्वर की ओर से हमें जो सान्त्वना मिलती है, उसके द्वारा हम दूसरों को भी उनकी हर प्रकार की तकलीफ में सान्त्वना देने के लिए समर्थ हो जायें।" *(2 कुरिन्थी 1, 4)* यही है 'सान्त्वना' जो प्रभु ही देता है।

हर रोज, यूखरिस्तीय प्रभु की उपस्थिति में कुछ मौन क्षण बिताने के लिए आप समय निकालें। प्रभु आपके अन्दर और आपके द्वारा क्या करना चाहता है, यह आपकी सोच के परे है। अपने व्यस्त समय से कुछ समय निकालने के लिए, प्रभु आपको आमंत्रित करता है। "तुम लोग अकेले ही मेरे साथ निर्जन स्थान चले आओ और थोड़ा विश्राम कर लो।" (मारकुस 6, 31) वह हमसे कहता है "शान्त हो और जान लो कि मैं ही ईश्वर हूँ।" *(स्तोत्र 46, 11)*

उसकी प्रेममय उपस्थिति में प्रवेश कीजिए। आप बस शान्त रहें और परम पवित्र संस्कार में उपस्थित येशु को अवसर दीजिए कि वह आपको प्यार करे। आप ईश्वर के समक्ष, मौन...शान्त....अकेले...शिथिल और शून्य रहें। आप कुछ न कहें। कुछ न माँगे.... मौन रहें....शान्त रहें.... ईश्वर आपको देखें.... आप में कार्य करने दें..... बस इतना ही....। वह जानता है. ... वह सब समझता है..... वह आपको बहुत प्यार करता है.... वह सिर्फ अपने प्रेम से आपको देखना चाहता है। आप चुप रहें। शान्त रहें.... ईश्वर को आपके ऊपर प्यार उँड़ेलने दें। जिस प्रकार एक चट्टान सूर्य के सामने है और सूर्य की किरणों द्वारा गरम हो जाना उसकी नीयत है, उसी प्रकार यदि आप पवित्र परमप्रसाद के समक्ष हैं तो ईश्वर के पुत्र की चंगाइयों की किरणों के स्पर्श से अपने आपको अलग नहीं कर सकते हैं।

हर परिस्थिति में प्रार्थना द्वारा प्रभु की ओर मुड़ें।

ईश्वर प्रेम हैं। आप जैसे भी हैं, ईश्वर आपको प्यार करता है। इसलिए आप जैसे भी हो आप उनके समक्ष जा सकते हैं। वो आपके संघर्षों को समझता है। आपको जैसे बनना चाहिए, वैसी मदद देने के लिए वह आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। यदि आप क्रोधित हो, निराश हो, उदास हो, खुश हो या जो भी हो अर्थात् हर परिस्थिति में पूरे भरोसे के साथ ईश्वर के पास जायें। वह आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

क. जब आप शान्ति में हैं तो मरियम के समान प्रभु के चरणों पर बैठकर प्रार्थना करें।

लूकस 10, 39: *मरियम, प्रभु के चरणों में बैठ कर उनकी शिक्षा सुनती रही।*

ख. जब आप क्रोधित हों तो मारथा या येरमियाह के समान प्रार्थना करें

जब आप गुस्से में हों तो आप येशु के पास जायें और अपना क्रोध उनके सामने प्रकट करें। वह बहुत ही कोमल और प्रेममय है। मारथा और नबी येरमियाह की प्रार्थनाओं पर ध्यान दें। मारथा अपनी बहन से क्रोधित थी। नबी येरमियाह यहोवा से क्रोधित था। उनकी प्रार्थनाएँ उनके क्रोध की अभिव्यक्ति हैं।

लूकस 10, 40-41: मारथा सेवा-सत्कार के अनेक कार्यों में व्यस्त थी। उसने पास आकर कहा, ''प्रभु! क्या आप यह ठीक समझते हैं कि मेरी बहन ने सेवा-सत्कार का पूरा भार मुझ पर ही छोड़ दिया है? उससे कहिए कि वह मेरी सहायता करे।'' प्रभु ने उसे उत्तर दिया, ''मारथा! मारथा! तुम बहुत-सी बातों के विषय में चिन्तित और व्यस्त हो।''

यिर्मयाह 20, 7-9: *प्रभु! तूने मुझे राज़ी किया और मैं मान गया। तूने मुझे मात कर दिया और मैं हार गया। मैं दिन भर हँसी का पात्र बना रहता हूँ। सब के सब मेरा उपहास करते हैं। जब-जब मैं बोलता हूँ, तो मुझे चिल्लाना और हिंसा तथा विध्वंस की घोषणा करनी पड़ती है। ईश्वर का वचन मेरे लिए निरन्तर अपमान तथा उपहास का कारण बन गया है। जब मैं सोचता हूँ, ''मैं उसे भुलाऊँगा, मैं फिर कभी उसके नाम पर भविष्यवाणी नहीं करूँगा'', तो उसका वचन मेरे अन्दर एक धधकती आग जैसा बन जाता है। जो मेरी हड्डी-हड्डी में समा जाती है। मैं उसे दबाते-दबाते थक जाता हूँ और अब मुझसे नहीं रहा जाता।*

ग. गहरे कष्ट में हैं? अन्ना के समान प्रार्थना करें।

अपने दुःख और कष्टों के उन क्षणों में अपनी परेशानियों को प्रभु की उपस्थिति में उँडेलने की कोशिश करें। अन्ना की प्रार्थना ने समूएल को संसार का सबसे बड़ा नबी बना दिया।

1 समूएल 1, 15: *मैं बहुत दुःखी हूँ.... मैं प्रभु के सामने अपना हृदय खोल रही थी।*

स्तोत्र 77, 2-3: *मैं ऊँचे स्वर से ईश्वर को पुकारता हूँ। मैं ईश्वर को पुकारता हूँ, वह मेरी सुनेगा। अपने संकट के दिन मैं प्रभु को खोजता हूँ। दिन-रात बिना थके उसके आगे हाथ पसारता हूँ। मनन करते-करते मेरी आत्मा शिथिल हो जाती है।*

घ. निराश हैं? मूसा के समान प्रार्थना करें।

जब मूसा निराश हो गया था तब वह अपनी पीड़ा और शिकायतों के साथ प्रभु की ओर मुड़ा। उसके शब्द उसके क्रोध और निराशाओं को अभिव्यक्त करते हैं, साथ-साथ वह एक सुन्दर प्रार्थना भी बन गई।

गणना 11, 11-15: *और उसने प्रभु से यह कहा, ''तू अपने दास को इतना दुःख क्यों दे रहा है? तू मुझ पर इतना अप्रसन्न क्यों है कि तूने इस प्रजा का पूरा भार मुझ पर ही डाल दिया है? क्या मैंने इसे उत्पन्न किया है, जो तू मुझसे कहता है-जिस तरह दाई दूध-पीते बच्चे को संभालती है, तुम इसे गोद में उठा कर उस देश ले जाओ, जिसे मैंने इसके पूर्वजों को देने की शपथ खायी है। मैं इन सब लोगों के लिए कहाँ से माँस ले आऊँ! वे विलाप करते हुए मुझसे कहते हैं, 'हमें खाने के लिए माँस दीजिये'। मैं अकेले ही इस प्रजा को नहीं संभाल सकता, मैं यह भार उठाने में असमर्थ हूँ। यदि मेरे साथ तेरा यही व्यवहार हो, तो यह अच्छा होता कि तू मुझे मार डालता। यह संकट मुझ से दूर करने की कृपा कर।''*

ड. संकट के समय येशु के समान प्रार्थना करें

मारकुस 14, 32-36: *वे गेथसेमनी नामक बारी पहुँचे। येशु ने अपने शिष्यों से कहा, ''तुम लोग यहाँ बैठे रहो। मैं तब तक प्रार्थना करूँगा।'' वे पेत्रुस, याकूब और योहन को अपने साथ ले गये। वे भयभीत तथा व्याकुल होने लगे और उनसे बोले, ''मेरी आत्मा इतनी उदास है कि मैं मरने-मरने*

को हूँ। यहाँ ठहर जाओ और जागते रहो।'' वे कुछ आगे बढ़कर मुँह के बल गिर पड़े और यह प्रार्थना करते रहे कि यदि हो सके, तो यह घड़ी उन से टल जाये। उन्होंने कहा, ''अब्बा पिता, तेरे लिए सब कुछ सम्भव है। यह प्याला मुझसे हटा ले। फिर भी मेरी नहीं, बल्कि तेरी ही इच्छा पूरी हो।''

च. जब खुश हों तो माँ मरियम के समान प्रार्थना करें।

लूकस 1, 46: *तब मरियम बोल उठी, ''मेरी आत्मा प्रभु का गुणगान करती है।''*

धन्य हैं वे जो प्रभु के घर में निवास करते हैं

स्तोत्र के रचयिता के इन सुन्दर शब्दों पर ध्यान दें, जो प्रभु का घर और उस घर में निवास करने के लिए चुने और बुलाये गये लोगों के सौभाग्य के बारे में बताता है। अगर आप जीवन की जिम्मेदारियों से मुक्त हैं या अपने आपको कुछ समय के लिए मुक्त कर सकते हैं तो प्रार्थना घर में जीवन बिताने के लिए प्रभु की कृपा के लिए निवेदन करें। *''मैंने प्रभु से यही वरदान माँगा है, यही मेरी अभिलाषा रही कि प्रभु की सौम्यता के दर्शन के लिए, मैं जीवन भर प्रभु के घर में निवास करूँ।'' (स्तोत्र 27, 4)*

स्तोत्र 84, 2-3: *विश्वमण्डल के प्रभु! कितना रमणीय है तेरा मन्दिर! प्रभु का प्रांगण देखने के लिए मेरी आत्मा तरसती रहती है। मैं उल्लास के साथ तन-मन से जीवन्त ईश्वर का स्तुतिगान करता हूँ।*

स्तोत्र 84, 5-8: *तेरे मन्दिर में रहने वाले धन्य हैं! वे निरन्तर तेरा स्तुतिगान करते हैं। धन्य हैं वे, जो तुझ से बल पाकर तेरे पर्वत सियोन की तीर्थयात्रा करते हैं। वे सूखी घाटी पार करते हुए उसे निर्झर भूमि बनाते हैं – प्रथम वर्षा उसे आशीर्वाद प्रदान करती है। चलते-चलते उनका उत्साह बढ़ता है और वे सियोन में प्रभु के सामने उपस्थित होते हैं।*

स्तोत्र 92, 14-16: *वे प्रभु के मन्दिर में रोपे गये हैं; वे हमारे ईश्वर के प्रांगण में फलते-फूलते हैं। वे लम्बी आयु में भी फलदार हैं। वे रसदार और हरे-भरे रहते हैं; जिससे वे प्रभु का न्याय घोषित करें : ''प्रभु मेरी चट्टान है। उसमे कोई अन्याय नहीं।''*

स्तोत्र 65, 5: *धन्य है वह, जिसे तू चुनता और अपने मन्दिर में निवास करने देता है! हम तेरे घर के वैभव से तेरे मन्दिर की पवित्रता से समृद्ध होंगे।*

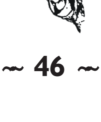

अध्याय नौ

कलीसिया के खज़ाने से कुछ प्रार्थनाएँ

इस अध्याय में प्रार्थना करने के कुछ तरीके और कुछ उपयोगी प्रार्थनाएँ प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

1. दिव्य प्रामाणिक प्रार्थना

कलीसिया प्रार्थना की शक्ति को समझती है। संसार के लिए प्रार्थना करना ही उसका मिशन है। इसलिए कलीसिया की प्रामाणिक (ब्रीवियरी या डिवाइन ऑफिस) प्रार्थना करना पुरोहितों का कर्तव्य है। कलीसिया की प्रामाणिक प्रार्थना एक शक्तिशाली सुन्दर तरीका है जो पवित्र ग्रन्थ के साथ ईश्वर की स्तुति एवं आराधना करती है और संसार एवं कलीसिया की विभिन्न आवश्यकताओं के लिए निवेदन भी करती है। एक पुरोहित होने के नाते, कलीसिया की प्रामाणिक प्रार्थना की शक्ति एवं उसके महत्व को समझने में मुझे कई साल लग गये। प्रार्थना भवनों में रहने वालों को मैं प्रोत्साहित करूँगा कि वे कलीसिया की प्रामाणिक प्रार्थना की एक प्रतिलिपि रखें और पुरोहित या किसी धर्मसंघी व्यक्ति की मदद से, समुदाय में कलीसिया की प्रामाणिक प्रार्थना को बोलने का आरंभ करें। हर दिन की, सुबह की और शाम की प्रार्थनाओं में पहले से ही सुन्दर सुनियोजित निवेदन छपे हुए हैं जिसकी प्रार्थना करने के बाद आप अपना निवेदन जोड़ सकते हैं। यह शक्तिशाली है क्योंकि जब आप इस प्रार्थना को करते हैं तो आप पूरी कलीसिया के साथ प्रार्थना कर रहे हैं।

2. 'येशु प्रार्थना' मध्यस्थता की एक शक्तिशाली विधि

येशु प्रार्थना, प्रार्थना करने का सबसे साधारण विधि है। ''दि वे ऑफ ए पिलग्रिम'' (एक तीथयात्री की राह) नामक पुस्तिका ही सबसे प्रचालित किताब है जिसको पढ़कर आप यह विधि सीख सकते हैं। रूस में येशु-प्रार्थनाओं के शिक्षक स्टोरज़ इस प्रकार समझाते हैं :

''अनन्त आन्तरिक येशु-प्रार्थना, अपने होंठों, अपनी ज़ुबान, अपनी बुद्धि और अपने हृदय द्वारा एक अविरत, निरन्तर येशु मसीह के दिव्य नाम

की पुकार है। इस प्रार्थना के दौरान प्रार्थना करने वाला व्यक्ति येशु की निरन्तर उपस्थिति की कल्पना करता है: मतलब, येशु की निरंतर उपस्थिति के बोध का अभ्यास करता है। और कहीं भी, किसी भी समय, सोते समय भी, उन सभी क्षणों पर जो कुछ वह करता है उन सब पर कृपा के लिए प्रार्थना करता है। इन शब्दों से, इस प्रार्थना का भाव प्रकट होता है **''प्रभु येशु मसीह, मुझ पर, दया कर।''**

एक मध्यस्थ होने के नाते आप मनुष्यों के प्रतिनिधि के रूप में ईश्वर के सामने खड़े होने के लिए बुलाये गये हैं। दूसरों के पापों और दु:ख तकलीफों को अपना समझकर आप ईश्वर की कृपा माँगते हुए पुकार-पुकार उनसे निवेदन करें।

येशु-प्रार्थना सुसमाचार जीने की रीति है या ख्रीस्तीय धार्मिकता का एक निश्चित रूप है जो एक मध्यस्थ के लिए अति आवश्यक है। जो येशु-प्रार्थना को अपनाना चाहते हैं उन्हें इन पाँच बातों पर ध्यान देना चाहिये

क. **उद्देश्य की स्पष्टता :** पवित्र बाइबल के वचनों का आज्ञाकारी बनते हुए येशु-प्रार्थना के मार्ग में प्रवेश करें : ''निरन्तर प्रार्थना करते रहें'' (1 थेसलनीकि 5, 17)। इस प्रार्थना के द्वारा, पूरी शक्ति से, पूरी बुद्धि से और पूरी आत्मा से अपने आप में परिवर्तन लाते हुए पूरी तरह ईश्वर का बनना होगा। किसी लाभ या आध्यात्मिक अनुभव पाने के उद्देश्य से इस प्रार्थना को नहीं करना चाहिए।

ख. **पवित्र धर्मग्रन्थ का अध्ययन :** आज्ञाकारी बनने का अर्थ है, नये विधान विशेषकर सुसमाचार का अध्ययन करते हुए येशु मसीह को सुनना और उनके शब्दों और उनके व्यक्तित्व से परिचित होना। यह अध्ययन येशु-प्रार्थना के अभ्यास के दौरान न करें बल्कि किसी और समय करें।

ग. **ध्यानपूर्वक आरम्भ करना :** आरंभकों को दिन में एक या दो बार सिर्फ 10 या 15 मिनट के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। शुरुआत में काफी लम्बे समय के लिए इस प्रार्थना में अपने आपको जोर न दें। अगर आप निष्ठापूर्वक और दृढ़ता से प्रार्थना करेंगे तो आपकी प्रार्थना, पूरे दिन या पूरे जीवन तक व्याप्त रहेगा।

घ. **शारीरिक मुद्राः** यह अभ्यास सीधे बैठकर, एकाग्रता में होनी चाहिए। कुर्सी पर या जमीन पर या गिरजाघर की टेकनी पर घुटने के बल पर इस प्रार्थना को कर सकते हैं। इस पर ध्यान दें कि येशु मसीह की पवित्र उपस्थिति की अवबोधता के कारण इस अभ्यास को बड़ी श्रद्धा के साथ करें। अपने श्वास को सुनें, मानो कि वह ईश्वर का श्वास हो और श्वास के साथ शब्दों को बहने दें, मानो कि स्वयं पवित्र आत्मा से ये शब्द आ रहे हो : 'प्रभु येशु मसीह, मुझ पर दया कर'। जैसे ही आप श्वास अन्दर लेंगे और बाहर फेंकेंगे, ये शब्द पूरी तरह वितरित हो जायेंगे। होंठों और ज़ुबान की गति (चाल) महत्वपूर्ण और आवश्यक है क्योंकि यहाँ से येशु-प्रार्थना एक प्रज्वलन के समान है जो शरीर की सभी कोशिकाओं में जाती है। येशु-प्रार्थना न केवल आत्मा और बुद्धि को बल्कि पूरे शरीर को प्रभु की उपस्थिति से भर देती है।

ड. **उनकी दया के लिए पुकारेंः** यह विधि येशु-प्रार्थना के अभ्यास के सत्व में जाने का सिर्फ माध्यम है ताकि पूर्ण भरोसे के साथ कोई येशु को उसकी दया के लिए पुकार सकें : उसी दया की प्रतिज्ञा येशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा की थी। पापमय मानवजाति का प्रतिनिधि बनकर येशु की पवित्र उपस्थिति में खड़े होकर, अपने ऊपर और पूरे मानव परिवार पर उनकी दया के लिए पुकारें। ''प्रभु येशु मसीह मुझ पर दया कर''। पुकार का अर्थ है ''मैं जैसा भी हूँ मुझे अपना ले और मुझे वैसा बना जैसा कि आप चाहते हैं।'' उनकी बहती दया और कृपा, शुद्धीकरण और रूपान्तरण की ओर ले जाती है और कभी-कभी यह रूपान्तरण की प्रक्रिया दुःखदायी होती है। पर इस रूपान्तरण का फल, असीम महिमा एवं संसार के लिए आशिष है। क्योंकि ईश्वर का दयापूर्ण प्रेम हमारे द्वारा पूरी मानवजाति पर और सारी सृष्टि पर बहेगी। येशु-प्रार्थना एक बहुत ही शक्तिशाली मध्यस्थता का मार्ग है। ''धन्य है वे, जो शोक करते हैं। उन्हें सान्त्वना मिलेगी।'' (मत्ती 5, 4)

3. करुणा की माला विनती

करुणा की माला विनती, मध्यस्थता के लिए अत्यन्त प्रभावशाली है। येशु मसीह के क्रूस एवं दुःखभोग के पुण्यफलों को समर्पित करने

में अथवा जरूरतमंदों के लिए ईश्वर की दया और कृपा की माँग करने में यह प्रार्थना हमारी मदद करती है।

क. क्रूस के चिन्ह द्वारा शुरू करें : हे हमारे पिता (एक बार); प्रणाम मरिया (एक बार) और प्रेरितों का धर्मसार बोलें।

ख. माला विनती में जहाँ 'हे हमारे पिता' बोलते हैं, उस जगह निम्नलिखित प्रार्थना बोलें :

हे परम पिता! आपके प्रिय पुत्र एवं हमारे मुक्तिदाता येशु के दिव्य शरीर और रक्त, आत्मा और ईश्वरीयता को हमारे और मानव जाति के पापों की मुक्ति के लिए मैं आपको समर्पित करता/करती हूँ। (एक बार)

ग. 10 बार 'प्रणाम मरिया' प्रार्थना की जगह निम्नलिखित प्रार्थना बोलें :- ***प्रभु येशु के दुःखभोग और क्रूस मरण के द्वारा, हम पर और सारी दुनिया पर दया कर। (10 बार)***

'ख' और 'ग' को पाँचों दहाई के लिए प्रयोग करें।

घ. भेद के अंत में (पिता, पुत्र और पवित्रात्मा की जगह) **हे पावन ईश्वर! हे पावन सर्वशक्तिमान ईश्वर, हे पावन अमर ईश्वर, हम पर और सारी दुनिया पर दया कर। (तीन बार)**

4. पवित्र आत्मा से प्रार्थना

आ पवित्र आत्मा, अपने विश्वासियों के हृदयों को भर दे और उन हृदयों में अपने प्रेम की आग प्रज्वलित कर दे। अपनी आत्मा भेज दे और वे नई सृष्टि बन जाएँ और पृथ्वी की आकृति को नया बना दे।

5. येशु अपनी आत्मा भेज दे

प्रभु येशु मसीह, ईश्वर के पुत्र सारी पृथ्वी पर अब अपनी आत्मा भेज दे। पवित्र आत्मा सभी राष्ट्रों के लोगों के हृदयों में निवास करे ताकि वे हर विकृति से, संकट से और युद्ध से बचे रहें। माँ मरियम, सभी राष्ट्रों की माँ, हमारे लिए और पूरे संसार के लिए प्रार्थन कर।

6. छुटकारे की प्रार्थना

हमारे लिए कलवारी पर बहे येशु मसीह के पवित्र लहू के द्वारा प्रभु

येशु मसीह के नाम पर, ईश्वर की महिमा के लिए, मैं अपने लिए, सभी प्रिय जनों के लिए, मेरे दोस्तों और यहाँ उपस्थित सभी लोगों के लिए सुरक्षा माँगता हूँ। येशु मसीह और उनके मूल्यवान रक्त के नाम पर मैं आकाश में, पृथ्वी पर, जल में, पृथ्वी के नीचे और दुष्ट आत्माओं की दुनिया से आने वाली सारी शैतानी ताकतों को बांधता हूँ। येशु के पवित्र लहू द्वारा इस जगह घर को मैं बाँधता हूँ ताकि कोई शैतानी ताकत प्रवेश न करे ओर न कोई अतींद्रिय सम्बन्ध स्थापित हो सके। येशु तुझे धन्यवाद, येशु तेरी स्तुति हो (अनोखी भाषाओं में प्रार्थना करें।)

7. सुरक्षा के लिए प्रार्थना

प्रभु येशु मसीह तेरे पवित्र शरीर और लहू में विश्वास द्वारा मैं अपने लिए और अपने परिवार के लिए पूर्ण सुरक्षा माँगता हूँ। मैं आपके मूल्यवान रक्त द्वारा, सिर से पैर तक अपने आप को अभिषिक्त करता हूँ। मैं पूर्ण रूप से अपने आप को, अपनी सम्पत्ति को और प्रिय जनों को आपकी देख रेख में समर्पित करता हूँ। हे प्रभु, हमें अपने पवित्र आत्मा के स्नेहमय आलिंगन से घेर ले। हमें हर शैतानी आत्मा से, अन्धकार, सन्देह, नकारात्मक विचार, निराशा, विपत्ति, शंका, सुस्ती और टाल-मटोल की बुराइयों से बचा। पृथ्वी, अग्नि, जल और आकाश के सभी संकटों और आपदाओं से हमें बचा। साहस, धैर्य, भरोसा, विश्वास और विवेक के वरदानों से हमें भर दे। मैं यह निवेदन आपके पवित्र नाम से करता हूँ। आमेन।

8. सन्त मिखाइल दूत से निवेदन

स्वर्गिक सेना के प्रतापी राजकुमार, हे सन्त मिखाइल दूत, अन्धकारमय संसार के अधिपतियों, अधिकारियों तथा शासकों और आकाश के दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध संघर्ष में तू हमें सुरक्षा दे। (एफीसी 6, 12) मनुष्यों की सहायता के लिए आ, जिन्हें ईश्वर ने अपने स्वरूप और प्रतिरूप में बनाया और जिन्हें शैतान के अत्याचार से बड़ी कीमत चुकाकर प्रभु ने मुक्त किया है। पवित्र कलीसिया आपको उसके रखवाल और संरक्षक के रूप में सम्मान करती है। मुक्ति प्राप्त आत्माओं को स्वर्ग में ले जाने का भार प्रभु ने आपको दिया है। शक्ति के ईश्वर से निवेदन करें कि वे शीघ्र ही शैतान को आपके पैरों तले कुचल दे (रोमी 16, 20)। ताकि वह मनुष्य को बन्दी न बनाये और कलीसिया को हानि न पहुँचा सके। हमारे निवेदनों को सर्वोच्च प्रभु के सम्मुख प्रस्तुत कर, ताकि इन निवेदनों के फलस्वरूप उनकी कृपाओं की

वर्षा अविलम्ब हमारे ऊपर बरसे। 'पंखदार सर्प को, उस पुराने साँप अर्थात इबलीस या शैतान' को पकड़कर बाँध दे और अगाध गर्त्त में डाल दे 'जिससे वह सर्प राष्ट्रों को कभी नहीं बहकाये।' (प्रकाशना 20, 2-3)

9. शैतान और विद्रोही दूतों के विरुद्ध प्रार्थना

संत पापा लिओ तेरहवीं के आदेश से यह प्रार्थना प्रकाशित की गई है। सन्त पापा पुरोहितों को प्रबोधित करते हैं कि वे शैतान की शक्ति को वश में करने के लिए और उसकी हानि से बचने के लिए, इस प्रार्थना को अपदूत मोचन विधि (Exorcism) के सरल रूप में बोलें। विश्वासी भी इस प्रार्थना को स्वयं अपने नाम से और उसी उद्देश्य के लिए एक अधिकृत प्रार्थना के रूप में कर सकते हैं। जब शैतान द्वारा मनुष्यों में दुर्भाव, तीव्र प्रलोभन, भूचाल और विभिन्न संकट उत्पन्न करने की शंका होती है, तब इस प्रार्थना के उपयोग की सलाह दी गई है। शैतान को बाहर निकालने के लिए एक समारोही अपदूत मोचन के रूप में इसका प्रयोग कर सकते हैं। कलीसिया के नाम से और सिर्फ धर्मोध्यक्ष के आदेश से, एक पुरोहित ही इसे समारोही अपदूत मोचन विधि के रूप में प्रयोग कर सकता है। जहाँ क्रूस का चिन्ह (+) दिया हुआ है, वहाँ पुरोहित द्वारा आशीष देने का संकेत है। यदि लोकधर्मी द्वारा यह प्रार्थना बोली जाती है, तो क्रूस के संकेत पर वह व्यक्ति मौन रूप से अपने ऊपर क्रूस का चिह्न लगाये।

अपदूत मोचन की प्रार्थना (Exoricsm Prayer)

+ पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर! आमेन।

येशु मसीह, हमारे ईश्वर और प्रभु के नाम पर, पवित्र कुँवारी मरियम, ईश्वर की माँ, सन्त मिखाइल दूत, धन्य प्रेरित पेत्रुस और पौलुस तथा सभी सन्तों की मध्यस्थता की शक्ति द्वारा (मेरी/हमारी पुरोहिताई सेवाकार्य के अधिकार की शक्ति द्वारा) हम पूरे आत्म-विश्वास के साथ शैतान को उसके सारे छल कपट और आक्रमण के साथ भगाने की प्रतिज्ञा लेते हैं।

स्तोत्र 68, 2-3: ईश्वर उठे, उसके शत्रु बिखर जायें, उसके विरोधी उसके सामने से भागें। तू उन्हें धुएँ की तरह उड़ा दे। मोम जिस तरह आग में पिघलता है, उसी तरह विधर्मी ईश्वर के सामने नष्ट हो जायें।

पु. प्रभु के इस क्रूस को देख, और शत्रुओं के दल, यहाँ से निकल जा।

उ. उसने यूदा की जनजाति का शेर, दाऊद की सन्तति पर विजय प्राप्त की है।

पु. प्रभु की दया हम पर उतर आये।

उ. जैसा कि उनपर हमारी आशा है।

सभी अशुद्ध आत्माएँ, शैतानी शक्तियाँ, सभी नारकीय आक्रामक आत्माएँ, सभी दुष्ट सेना समूह एवं समुदाय, तुम जो भी हो हम तुम्हें हमारे बीच में से भागने का आदेश देते हैं। हमारे प्रभु येशु के नाम और शक्ति से + तुम ईश्वर की कलीसिया से और उन आत्माओं से जिन्हें ईश्वर ने अपने प्रतिरूप और सदृश बनाया और पवित्र मेमने के मूल्यवान रक्त द्वारा मुक्ति प्राप्त है, उनसे बाहर खींचकर निकाल लिया जाये। +

सबसे धूर्त और चालाक सर्प, तुम कभी भी मानव जाति को धोखा नहीं दे पाओगे, कलीसिया पर अत्याचार नहीं कर पाओगे, ईश्वर के चुने हुओं पर यन्त्रणा नहीं कर पाओगे और गेहूँ की तरह उन्हें छान नहीं पाओगे।

+ सर्वोच्च ईश्वर तुम्हें आदेश देता है, वह जिनके साथ, तुम, तुम्हारी सबसे बड़ी गुस्ताखी में आज भी बराबर होने का दावा करते हो। + ''वह, जो चाहता है सभी मनुष्य मुक्ति प्राप्त करें और सत्य को जानें।'' (1 तिमथी 2, 4)+ पिता परमेश्वर तुम्हें आदेश देता है। + ईश्वर का पुत्र तुम्हें आदेश देता है। + पवित्र आत्मा ईश्वर तुम्हें आदेश देता है। + मसीह, ईश वचन जो शब्द बना, तुम्हें आदेश देता है।+ वह, जो तुम्हारी ईर्ष्या द्वारा हराए हुओं को अपनी अर्थात् हमारी मानव जाति को बचाने के लिए, क्रूस पर मरण तक आज्ञाकारी बनकर अपने को और भी दीन बना लिया। वह, जिसने अपनी कलीसिया को दृढ़ चट्टान पर निर्मित किया है और घोषित किया है कि नरक के फाटक कभी भी उसके विरुद्ध नहीं टिकेंगे क्योंकि वह सभी दिन यहाँ तक कि संसार के अन्त तक उसमें निवास करता है। (मत्ती 28, 20)। क्रूस का पवित्र चिन्ह तुम्हें आदेश देता है,+ ख्रीस्तीय विश्वास के रहस्यों की शक्ति भी तुम्हें आदेश देती है। + ईश्वर की प्रतापी माँ, कुँवारी मरियम, वही जिसने अपनी दीनता द्वारा और अपने निष्कंलक गर्भागमन के प्रथम क्षण से ही तुम्हारे अंहकारी सर को कुचल डाला, वह तुम्हें आदेश देती है, पवित्र प्रेरित पेत्रुस और पौलुस और अन्य प्रेरितों का विश्वास तुम्हें आदेश देता है। + शहीदों का रक्त और सन्तों की पुण्य मध्यस्थता, तुम्हें आदेश देती है, + शापित पंखदार सर्प और तुम दुष्ट सेना, हम तुम्हें जीवन्त ईश्वर द्वारा, +सच्चे ईश्वर द्वारा + पवित्र ईश्वर द्वारा

+ वह ईश्वर जिसने संसार को इतना प्यार किया कि उसने अपना एकलौते पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उसमें विश्वास करता है उसका कभी सर्वनाश नहीं होगा बल्कि अनन्त जीवन प्राप्त करेगा। (सन्त योहन 3)। उसी परमेश्वर द्वारा हम आदेश देते हैं, मनुष्य जाति को धोखा देने और उसके ऊपर अनन्त नरक-दण्ड के ज़हर डालने का कार्य बन्द करो; कलीसिया को हानि पहुँचाना और उसकी स्वतन्त्रता में बाधा डालना बन्द करो।

शैतान! सभी छल-कपट के मालिक और आविष्कारक, मनुष्य की मुक्ति के शत्रु, दूर चला जा। येशु मसीह को जगह दे जिसमें तुमने अपना कोई भी कार्य नहीं पाया। मसीह के पवित्र रक्त की कीमत द्वारा प्राप्त एकमात्र पवित्र, कैथलिक कलीसिया को जगह दे। ईश्वर के शक्तिशाली हाथों के नीचे झुक जा; जब हम येशु के पवित्र और अति भयंकर नाम को पुकारें तो थर्रा कर भाग जा, जिस नाम से नरक काँप जाता है, जिस नाम को केरुबिम और सेराफिम स्तुति करते हुए निरन्तर दुहराते हैं : पवित्र, पवित्र, पवित्र हे प्रभु, सेनाओं के ईश्वर।

प्र. हे प्रभु, हमारी प्रार्थना सुन।
उ. और हमारी पुकार आप तक पहुँचे।
प्र. प्रभु आपके साथ हो।
उ. और आपके साथ भी।

हम प्रार्थना करें: *स्वर्ग के ईश्वर, स्वर्ग दूतों के ईश्वर, महादूतों के ईश्वर, कुलपतियों के ईश्वर, नबियों के ईश्वर, धर्मवीरों के ईश्वर, कुँवारियों के ईश्वर, ईश्वर जिन्हें मृत्यु के पश्चात् जीवन देने और काम के बाद विश्राम देने की शक्ति है, क्योंकि तुझे छोड़ और कोई ईश्वर नहीं है और न ही कोई हो सकता है, क्योंकि तू ही सब कुछ का, दृश्य तथा अदृश्य का सृष्टिकर्त्ता है, हम विनम्रतापूर्वक अपने आपको तेरे प्रतापी ऐश्वर्य के समक्ष दण्डवत करते हैं और तुझसे विनती करते हैं कि तू अपनी शक्ति द्वारा नारकीय आत्माओं के सभी शासन से, उसके फन्दों से, उसके छलकपट और प्रचण्ड दुष्टता से हमें बचा, अपनी कृपा से, हे प्रभु, हमें अपनी शक्तिशाली सुरक्षा प्रदान कर कि हम सुरक्षित और स्वस्थ रहें। यह हम अपने प्रभु येशु ख्रीस्त के द्वारा तुझसे माँगते हैं, आमेन।*

उपसंहार

‘‘प्रार्थना उस क्षेत्र तक पहुँच सकती है जहाँ मानवीय तर्क, मानवीय प्रयास तथा निपुणता, स्वतन्त्रता, विश्वास और प्रेम के क्षेत्र में सभी असफल जान पड़ता है।’’ जब हम यह मानते हैं कि प्रार्थना की शक्ति दुनिया को बदल सकती है तब समय की यह माँग है कि हम प्रार्थना और मध्यस्थता करें और लोगों को प्रार्थना हेतु प्रोत्साहन दें। इसके अलावा हम लोगों को प्रार्थना करने का अवसर उत्पन्न करना है। इस संसार की बढ़ती भौतिकता के कारण लोग अकेलेपन, तनाव, मानसिक और आत्मिक बीमारी के शिकार बनते जा रहे हैं और इसलिए प्रार्थना और मध्यस्थता एक बहुत बड़ा मिशन है। चूँकि प्रार्थना और वचन की घोषणा का सान्त्वना समुदाय के शिष्यों को विशेष वरदान है, यह हमारी प्रार्थना, सपना और मिशन है कि हम संसार के विभिन्न जगहों पर ख्रीस्तीय आराधना केन्द्र स्थापित करें। इस मिशन को सफल बनाने के लिए हम उन लोगों को प्रेरित, प्रशिक्षित और शामिल करते हैं जो इस मिशन कार्य के लिए तैयार हैं। संत पापा जॉन पौल लिखते हैं ‘‘इसलिए मैं लोगों से अनुरोध करता हूँ कि वे रोगियों को पीड़ा की क्षमता सिखायें, रोगियों की देखभाल में लगे मिशनरियों के लिए अपनी पीड़ा को ईश्वर को अर्पित करने के लिए प्रोत्साहित करें। ऐसे बलिदान देने से रोगी खुद एक मिशनरी बन जाते हैं।’’ वयोवृद्ध, रोगी और अपंग लोग बहुमूल्य व्यक्ति हैं। पवित्र परम प्रसाद की उपस्थिति में समय बिताने से, उनके दुख दर्द में चंगाई और सान्त्वना आयेगी तथा मध्यस्थता का कार्य उनके जीवन में एक नया रूप लायेगा। उनको प्रार्थना (मध्यस्थता) करने के लिए प्रेरणा एवं प्रशिक्षण देना, सान्त्वना समुदाय के मिशन का अभिन्न हिस्सा है। समुदाय उन बहुमूल्य लोगों का अतिथ्य-सत्कार द्वारा सहायता करना चाहता है जो हमारे प्रार्थना भवन में आकर मध्यस्थ प्रार्थना में भाग लेना चाहते हैं। आइये हम अपनी सारी शक्ति तथा साधनों सम्पत्ति को, ईश्वर के राज्य की स्थापना के लिए और सारी मानवजाति की भलाई के लिए, अभिमुख करें।

मैं कृतज्ञता से उसी ईश्वरीय कृपा के बारे में सोचता हूँ जो मुझे फ्राँस में लिस्यू लेकर आई, जहाँ ईश्वर की कृपा और सन्त तेरेसा की मध्यस्थता द्वारा मैं इस पुस्तिका को पूरा कर पाया। मुझे मालूम है कि जो भी इस पुस्तिका को पढ़ेगा और इस्तेमाल करेगा, सन्त तेरेसा उन पर ईश्वरीय दया रूपी गुलाब की पँखुड़ियों को बरसायेंगी। ईश्वर की महिमा के लिए, उसके राज्य की स्थापना के लिए, प्रभु हमें कृपा प्रदान करें कि हम पवित्र कुँवारी मरियम, सभी दूतों और सन्तों के साथ मिलकर मध्यस्थता की उनकी अनन्त प्रेरिताई के कार्य में हम प्रवेश करें।

परिशिष्ट

सान्त्वना समुदाय के शिष्य

शिष्यों का समुदाय सान्त्वना, प्रभु में प्रेम के पथ पर चलने के लिए और ''सारे राष्ट्रों को शिष्य बनाने के लिए'' दूसरों के साथ प्रयास करने हेतु वचनबद्ध है। संस्कृत शब्द 'सान्त्वना' का अर्थ है दिलासा। स्वर्गिक पिता की सबसे सुन्दर भेंट येशु मसीह द्वारा मुक्ति है, जिसके द्वारा वह मानवजाति को भरोसा देता है। नबी इसायाह द्वारा ईश्वर कहता है, ''मेरी प्रजा को सान्त्वना दो, सान्त्वना दो।'' (इसायाह 40, 1)। इसलिए सान्त्वना के सदस्य, मानवजाति के सभी स्तरों में मुक्ति के सुसमाचार को लाने का प्रयत्न करते हैं।

यह प्रेरिताई का अभियान 'सान्त्वना शिष्यों का समुदाय' नाम से जाना जाता है। यह दिल्ली धर्मप्रान्त के परम श्रद्धेय विन्सेन्ट कोन्सेसाओ द्वारा, विश्वासियों की संस्था के रूप में सन् 2003 ई. में स्थापित हुआ। इस समुदाय में विवाहित दम्पती, अविवाहित पुरुष एवं स्त्री और पुरोहित हैं जो पवित्र स्वामी के शिष्य के रूप में समर्पित हैं। आत्माओं के लिए उत्साह, प्रार्थना के लिए प्यार और इस समुदाय से जुड़ने की इच्छा लोगों में होनी चाहिए। समुदायिक जीवन के प्रति खुला विचार आदि सद्‌गुण प्रेरितों की रानी मरियम इस समुदाय की स्वर्गिक संरक्षिका है।

दर्शन उक्ति

''सान्त्वना शिष्यों का एक समुदाय है जो प्रेम के पथ पर एक साथ रहकर प्रभु का अनुगमन करके लोगों की संस्कृति में देहधारण करके मिशन के साथ प्रार्थना और ईश वचन की घोषणा द्वारा ईश्वर के राज्य की स्थापना करने के लिए वचनबद्ध है।''

सान्त्वना के सुसमाचार-प्रचार के चार माध्यम

1. पवित्र परम प्रसाद की आराधना

अविरत आराधना प्रभु की चंगाई की सान्त्वना पूर्ण उपस्थिति को लोगों के लिए उपलब्ध कराती है। सान्त्वना प्रभु से भरोसा पाने की एक बुलाहट है। क्योंकि हम जानते हैं कि जैसे हम हैं वैसे हर व्यक्ति भीतर से जख्मी है और सबको ईश्वर की चंगाई के स्पर्श की आवश्यकता है। इसलिए सान्त्वना के पिता के सामने हम घुटने टेकते हैं। ''वह सारी दुःख-तकलीफों में हम को सान्त्वना देता रहता है, जिससे ईश्वर की ओर से हमें जो सान्त्वना मिलती है, उसके द्वारा हम दूसरों को भी, उनकी हर प्रकार की तकलीफ में सान्त्वना देने के लिए समर्थ हो जायें। *(1 कुरिन्थी 1, 4)*

सान्त्वना के दो आराधना सह मध्यस्थ केन्द्र हैं। एक दिल्ली की बुराड़ी में है और दूसरा केरल के कोट्टयम जिले में है। यहाँ की प्रार्थना द्वारा, भारत तथा विदेश के सभी क्षेत्रों के लोग, अपनी जरूरतों में आशीष और कृपा पाते हैं।

2. मध्यस्थता की प्रार्थना

प्रार्थना घटनाओं की धारा को बदल सकती है और कई बार यह एकमात्र साधन है जो ऐसा कर सकती है। हृदय के गुप्त स्थान जहाँ लोग निर्णय लेते हैं, जो इतिहास की घटनाओं को निर्धारित करती है, वहाँ प्रार्थना का प्रभाव होता है। मध्यस्थ प्रार्थना की शक्ति को ध्यान में रखते हुए, कलीसिया एवं समस्त संसार पर दिव्य भरोसा और आशीष लाने के लिए सान्त्वना समुदाय दृढ़ मध्यस्थता करता है। मध्यस्थता के कार्य के लिए ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रेरित करने के लिए समुदाय, मध्यस्थ साधना का भी संचालन करता है।

3. वचन की घोषणा

रिडम्तोरिस मिसियो के 44वें अनुच्छेद में इस प्रकार उल्लेख है–''मिशन की इस जटिल वास्तविकता में प्रारंभिक घोषणा, मुख्य एवं अद्वितीय भूमिका निभाती है। चूँकि वह मनुष्य को, ''ईश्वर के प्रेम के रहस्य में, जो ख्रीस्त में व्यक्तिगत संबन्ध रखने के लिए उसे आमन्त्रित करता है'' (73) और मन-परिवर्तन का रास्ता खोलता है। इसलिए सान्त्वना समुदाय, सुसमाचार

प्रचार को जीवित रखने के उत्साह को बनाए रखने की हर वक्त कोशिश करता है और दूसरों के साथ सुसमाचार बाँटने के हर अवसर का उपयोग करता है। एक विशेष प्रेरिताई जो लोगों को मसीह की ओर ले जाता है, वो है कैथोलिक जिज्ञासा केन्द्र (CEC) । जिज्ञासा केन्द्र की प्रेरिताई की ओर सान्त्वना की विशेष वचनबद्धता है। विश्वासियों को सुसमाचार प्रचार के लिए प्रेरित करने के लिए ''सुसमाचार प्रचार के विद्यालय का आयोजन करना, इस समुदाय का प्राथमिक कार्य है।

4. जीवन का साक्ष्य

प्रेम का समुदाय बनना और मेल मिलाप के साथ सभी भाई बहनों का एक साथ रहना अपने आप में एक मिशन है। सान्त्वना के सदस्यों के लिए यह समुदाय प्रेम का शिक्षण-संस्थान है जहाँ सदस्य प्रेम की वर्णमाला सीखते हैं और प्रेम में चलना सीखते हैं, जिससे संसार उन्हें शिष्य जान ले।

हमारे सान्त्वना परिवार की यह कोशिश है कि इस समुदाय के हर एक सदस्य को लक्ष्य का बोध हो और समुदाय के निर्माण की प्रक्रिया में हर सदस्य सहायक बने। समुदाय के निर्माण में भूमिका निभाने के लिए हम इस परिवार में आपका स्वागत करते हैं।

सांत्वना समुदाय के केन्द्र

1. Santvana Community
   A-9, Hans Apartments
   West Sant Nagar, Burari-Post
   Delhi 110 084, India

2. Santvana Prayer House
   Salempur, Burari. P.O.
   Delhi- 110 084
   Tel:01-24510978, 09868902767

3. Santvana Community
   Bank Colony, Rani Bagan,
   R.M.C.H. P.O. Bariatu
   Ranchi, Jharkhan - 834009
   Tel: 06512543485
   Mobile : 09234300361

4. Santvana Community
   H.No. 22, Park Avenue
   Pushpanjali Ashiana
   Near UPSIDC Road
   Agra-282007
   Tel: 09359879676, 9897815540

5. Mission Jyothi
   Santvana Community
   Njarikuzhi, Kallara
   P.O., Kottayam
   Keral - 686611
   Tel: 04829267444
   Mobile : 09495235709

अधिक जानकारी के लिए कृप्या संम्पर्क करें:

Santvana Community of Disciples
A-9, Hans Apartments, West Sant Nagar, Burari-Post,
Delhi 110 084, India
Email: info@santvana.org

Tel: +91-11-65696632
+91-11-27612978 (O)

Prayer Help Line : pray4us@santvana.org.
+919868902767, +91-11-24510978,

Website: www.santvana.org